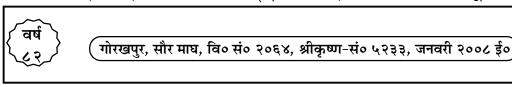
🕉 पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥



नमो देव्यै जगद्धात्र्यै शिवायै सततं नमः। दुर्गायै भगवत्यै ते कामदायै नमो नमः॥ नमः शिवायै शान्त्यै ते विद्यायै मोक्षदे नमः। विश्वव्याप्त्यै जगन्मातर्जगद्धात्र्यै नमः शिवे॥



्र संख्या १ पूर्ण संख्या १७४

देवताओंद्वारा किया गया देवीका स्तवन

नमो देवि विश्वेश्विर प्राणनाथे सदानन्दरूपे सुरानन्ददे ते। नमो दानवान्तप्रदे मानवानामनेकार्थदे भक्तिगम्यस्वरूपे॥ न ते नामसंख्यां न ते रूपमीदृक्तथा कोऽपि वेदादिदेवस्वरूपे। त्वमेवासि सर्वेषु शक्तिस्वरूपा प्रजासृष्टिसंहारकाले सदैव॥ न वा ते गुणानामियत्तां स्वरूपं वयं देवि जानीमहे विश्ववन्द्ये। कृपापात्रमित्येव मत्वा तथास्मान्भयेभ्यः सदा पाहि पातुं समर्थे॥

हे विश्वेश्विर! हे प्राणोंकी स्वामिनि! सदा आनन्दरूपमें रहनेवाली तथा देवताओंको आनन्द प्रदान करनेवाली हे देवि! आपको नमस्कार है। दानवोंका अन्त करनेवाली, मनुष्योंकी समस्त कामनाएँ पूर्ण करनेवाली तथा भिक्तके द्वारा अपने रूपका दर्शन देनेवाली हे देवि! आपको नमस्कार है। हे आदिदेवस्वरूपिणि! आपके नामोंकी निश्चित संख्या तथा आपके इस रूपको कोई भी नहीं जान सकता। सबमें आप ही विराजमान हैं। जीवोंके सृजन और संहारकालमें शिक्तस्वरूपसे सदा आप ही कार्य करती हैं। हे देवि! हे विश्ववन्द्ये! हमलोग न आपके गुणोंकी सीमा जानते हैं और न आपका स्वरूप ही जानते हैं। अत: रक्षा करनेमें समर्थ हे देवि! हमें केवल अपना कृपापात्र मानकर आप भयोंसे निरन्तर हमारी रक्षा करती रहें। [श्रीमहेवीभागवत]



'कल्याण' के सम्मान्य सदस्यों और प्रेमी पाठकोंसे नम्र निवेदन

१-'कल्याण' के ८२वें वर्ष-सन् २००८ का यह विशेषाङ्क 'श्रीमद्देवीभागवताङ्क' आपलोगोंकी सेवामें

प्रस्तुत है। इसमें ४७२ पृष्ठोंमें पाठ्य-सामग्री और ८ पृष्ठोंमें विषय-सूची आदि है। कई बहुरंगे एवं रेखाचित्र भी

दिये गये हैं। डाकसे सभी ग्राहकोंको विशेषाङ्क-प्रेषणमें लगभग एक माहका समय लग जाता है। २-वार्षिक सदस्यता-शुल्क प्रेषित करनेपर भी किसी कारणवश यदि विशेषाङ्क वी०पी०पी० द्वारा आपके

पास पहुँच गया हो तो उसे डाकघरसे प्राप्त कर लेना चाहिये एवं प्रेषित की गयी राशिका पुरा विवरण (मनीऑर्डर पावतीसहित) यहाँ भेज देना चाहिये जिससे जाँचकर आपके सुविधानुसार राशिकी उचित व्यवस्था की जा

सके। सम्भव हो तो उक्त वी०पी०पी० से किसी अन्य सज्जनको ग्राहक बनाकर उसकी सूचना यहाँ नये सदस्यके पूरे पतेसहित देनी चाहिये। ऐसा करके आप 'कल्याण' को आर्थिक हानिसे बचानेके साथ-साथ 'कल्याण' के

पावन प्रचारमें सहयोगी भी हो सकेंगे। ३-इस अङ्कुके लिफाफे (कवर)-पर आपकी सदस्य-संख्या एवं पता छपा है, उसे कृपया जाँच लें तथा

अपनी सदस्य-संख्या सावधानीसे नोट कर लें। रजिस्ट्री अथवा वी०पी०पी० का नम्बर भी नोट कर लेना चाहिये।

पत्र-व्यवहारमें सदस्य-संख्याका उल्लेख नितान्त आवश्यक है; क्योंकि इसके बिना आपके पत्रपर हम समयसे कार्यवाही नहीं कर पाते हैं। डाकद्वारा अङ्कोंके सुरक्षित वितरणमें सही पता एवं पिन-कोड आवश्यक है। अतः

अपने लिफाफेपर छपा अपना पता जाँच लेना चाहिये। ४-'कल्याण'एवं 'गीताप्रेस-पुस्तक-विभाग'की व्यवस्था अलग-अलग है। अतः पत्र तथा मनीऑर्डर आदि

सम्बन्धित विभागको अलग-अलग भेजना चाहिये।

२७

बालक-अङ्क

'कल्याण' के उपलब्ध पुराने विशेषाङ्क वर्ष

वर्ष विशेषाङ्क वर्ष मूल्य(रु०)

मूल्य(रु०)

८०

विशेषाङ्क विशेषाङ्क मूल्य(रु०) श्रीकृष्णाङ्क सत्कथा-अङ्क १२० 30 800

५३ सूर्याङ्क 90 ξ ईश्वराङ्क 90 38 तीर्थाङ्क १०० ५६ वामनपुराण 64 शक्ति-अङ्क सं देवीभागवत (मोटा टाइप) ५९ श्रीमत्स्यमहापुराण 9 १२० ₹8 १५०

१५० योगाङ्क सं० योगवासिष्ठ ६६ सं० भविष्यपुराण १०० ३५ १०० ११०

१० संत-अङ्क सं० शिवपुराण (बड़ा टाइप) ६९ गो-सेवा-अङ्क १२ १५० ₹ ०६९ ७५ १५

सं० ब्रह्मवैवर्तपुराण ७१ कुर्मपुराण साधनाङ्क १२० ₹9 १२० 60 श्रीभगवन्नाम-महिमा और भगवल्लीला-अङ्क १९ सं० पद्मपुराण १५० ६५ २० 60

गो-अङ्क प्रार्थना-अङ्क ७३ वेदकथाङ्क १२० ९० सं० मार्कण्डेयपुराण परलोक और पुनर्जन्माङ्क 60 १२० ७४ सं० गरुडपुराण 28 १०० ७० ४४-४५ १३०

गर्गसंहिता [भगवान् ७५ आरोग्य-अङ्क (संवर्धित सं०) 28 २२ नारी-अङ्क १४० श्रीराधाकृष्णकी दिव्य ७६ नीतिसार-अङ्क 60

भगवत्प्रेम-अङ्क उपनिषद्-अङ्क लीलाओंका वर्णन] २३ १२५ 60 हिन्दू-संस्कृति-अङ्क १५० ४४-४५ अग्निपुराण (मूल संस्कृतका (११ मासिक अङ्क उपहारस्वरूप) 28 १०० ७८ व्रतपर्वोत्सव-अङ्क सं० स्कन्दपुराणाङ्क हिन्दी अनुवाद) २५ 960 १३० १०० ____ भक्त-चरिताङ्क नरसिंहपुराण-सानुवाद ७९ देवीपुराण[महाभागवत] १४० २६ ४५ €0

श्रीगणेश-अङ्क

११०

४८

सं० नारदपुराण श्रीहनुमान-अङ्क ८० संस्कार-अङ्क २८ १२० ४९ 90 64 सं० श्रीवराहपुराण संतवाणी-अङ्क 28 ११० अवतार-कथाङ्क सभी अङ्कोंपर डाक-व्यय अतिरिक्त देय होगा। गीताप्रेस-पुस्तक-विक्री-विभागसे प्राप्य हैं।

९०

शक्तिपीठाङ्क

Hinduism Discord Serven https://dscaga/dharma 4.9NARE WHTH LAVERY Avinash/Sha

'श्रीमद्देवीभागवताङ्क'की विषय-सूची

मङ्गलाचरण

विषय		पृष्ठ-संख्या	विषय		पृष्ठ-संख्य
	केया गया तमाहात्म्य		४- श्रीमद्देवीभाग	ातसुभाषितसुधा वितमहापुराण (पूर्वार्ध)- न (राधेश्याम खेमका)	_
		श्रीमद्देवीभाग	वतमहापुराण	r	
अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
श्रवणकी महि २- श्रीमद्देवीभागव मणिकी कथा	माहात्म्य रा ऋषियोंके प्रति श्रीग् माका कथन तके माहात्म्यके प्रसंग	३१ में स्यमन्तक- ३३	इस प्रश्नके उ महिमा सुनान ९- भगवान् विष्ण् करना, विष्णु	ुयोगमायाके अधीन क्यों हो ग त्तरमें सूतजीद्वारा उन्हें आद्याश n jका मधु–कैटभसे पाँच हजा द्वारा देवीकी स्तुति तथा दे	क्ति भगवतीकी ७० र वर्षोंतक युद्ध वीद्वारा मोहित
३- श्रामद्दवाभागव	ातके माहात्म्यके प्रसंगमें र	राजा सुद्युम्नका	मधु-कैटभक	ा विष्णुद्वारा वध	७

४२

38

48

42

48

५६

49

६५

६७

४- श्रीमदेवीभागवतके माहात्म्यके प्रसंगमें रेवती नक्षत्रके पतन

५- श्रीमद्देवीभागवतपुराणकी श्रवण-विधि, श्रवणकर्ताके लिये

और पुन: स्थापनकी कथा तथा श्रीमद्देवीभागवतके श्रवणसे

राजा दुर्दमको मन्वन्तराधिप-पुत्रकी प्राप्ति

पालनीय नियम, श्रवणके फल तथा माहात्म्यका वर्णन

प्रार्थना करना

श्लोकसंख्याका निरूपण और उसमें प्रतिपादित विषयोंका वर्णन

उपपुराणों तथा प्रत्येक द्वापरयुगके व्यासोंका नाम

स्तुति करनेपर देवीका प्रसन्न होना, भगवान् विष्णुके

हयग्रीवावतारकी कथा.....

तथा उन दोनोंका ब्रह्माजीसे युद्धके लिये तत्पर होना.....

स्तुति करना

प्रथम स्कन्ध

१- महर्षि शौनकका सूतजीसे श्रीमदेवीभागवतपुराण सुनानेकी

२- सूतजीद्वारा श्रीमदेवीभागवतके स्कन्ध, अध्याय तथा

३- सूतजीद्वारा पुराणोंके नाम तथा उनकी श्लोकसंख्याका कथन,

४- नारदजीद्वारा व्यासजीको देवीकी महिमा बताना.......

५- भगवती लक्ष्मीके शापसे विष्णुका मस्तक कट जाना, वेदोंद्वारा

६- शेषशायी भगवान् विष्णुके कर्णमलसे मध्-कैटभकी उत्पत्ति

७- ब्रह्माजीका भगवान् विष्णु तथा भगवती योगनिद्राकी

१०- व्यासजीकी तपस्या और वर-प्राप्ति

११- बुधके जन्मकी कथा

१२- राजा सुद्युम्नकी इला नामक स्त्रीके रूपमें परिणति, इलाका

१३- राजा पुरूरवा और उर्वशीकी कथा.....

१४- व्यासपुत्र शुकदेवके अरणिसे उत्पन्न होनेकी कथा

१५- शुकदेवजीका विवाहके लिये अस्वीकार करना तथा

बुधसे विवाह और पुरूरवाकी उत्पत्ति, भगवतीकी स्तुति

करनेसे इलारूपधारी राजा सुद्युम्नकी सायुज्यमुक्ति

तथा व्यासजीद्वारा उनसे गृहस्थधर्मका वर्णन.....

व्यासजीका उनसे श्रीमदेवीभागवत पढ़नेके लिये कहना ... १६- बालरूपधारी भगवान् विष्णुसे महालक्ष्मीका संवाद, व्यासजीका

शुकदेवजीसे देवीभागवतप्राप्तिकी परम्परा बताना तथा

शुकदेवजीका मिथिला जानेका निश्चय करना......१७- शुकदेवजीका राजा जनकसे मिलनेके लिये मिथिला-

पुरीको प्रस्थान तथा राजभवनमें प्रवेश

सन्तानोत्पत्ति करना तथा परम सिद्धिकी प्राप्ति करना.......

शन्तनुकी मृत्यु, चित्रांगदका राजा बनना तथा उसकी मृत्यु,

विचित्रवीर्यका काशिराजकी कन्याओंसे विवाह और क्षयरोगसे मृत्यु, व्यासजीद्वारा धृतराष्ट्र,पाण्डु और विदुरकी उत्पत्ति...

१८- शुकदेवजीके प्रति राजा जनकका उपदेश

१९- शकदेवजीका व्यासजीके आश्रममें वापस आना. विवाह करके

२०- सत्यवतीका राजा शन्तनुसे विवाह तथा दो पुत्रोंका जन्म, राजा

60

१०६

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	द्वितीय स्कन्ध		३- ब्रह्मा, वि	त्रष्णु और महेशका विभिन्न लोव	 होंमें जाना तथा
१- ब्राह्मण	के शापसे अद्रिका अप्सराका मछर्ल	ो होना		। सदृश अन्य ब्रह्मा, विष्णु और म	
	प्रसे राजा मत्स्य तथा मत्स्यगन्धाकी उर्त्पा		आश्चर्य	चिकत होना, देवीलोकका दर्शन	१५०
	नीकी उत्पत्ति और उनका तपस्याके लिये		४- भगवती	के चरणनखमें त्रिदेवोंको सम्पृ	्रण ब्रह्माण्डका
३- राजा श	ान्तनु, गंगा और भीष्मके पूर्वजन्मकी कथ		दर्शन हो	ना, भगवान् विष्णुद्वारा देवीकी र	न्तुति करना १५३
४- गंगाजीह	द्वारा राजा शन्तनुका पतिरूपमें वरण, सात पुत्रों	का जन्म	५- ब्रह्मा औ	ार शिवजीका भगवतीकी स्तुति व	करना १५६
तथा गं	गाका उन्हें अपने जलमें प्रवाहित करना,	आठवें	६- भगवती	जगदम्बिकाद्वारा अपने स्वरूप	का वर्णन तथा
पुत्रके र	रूपमें भीष्मका जन्म तथा उनकी शिक्षा-न	दीक्षा ११७	'महासर	स्वती', 'महालक्ष्मी' और 'मह	काली ' नामक
५- मत्स्यग	न्था (सत्यवती)-को देखकर राजा शन्तनुक	ा मोहित	अपनी श	ाक्तियोंको क्रमश: ब्रह्मा, विष्णु औ	र शिवको प्रदान
होना, '	भीष्मद्वारा आजीवन ब्रह्मचर्य-व्रत धारण व	करनेकी	करना		१५९
प्रतिज्ञा	करना और शन्तनुका सत्यवतीसे विवाह.	१२०		न द्वारा परमात्माके स्थूल और सूक्ष्म न	
६- दुर्वासाव	का कुन्तीको अमोघ कामद मन्त्र देना, मन्त्रके	प्रभावसे		, राजस और तामस शक्तिका वर्णन	
कन्याव	स्थामें ही कर्णका जन्म, कुन्तीका राजा पाण्डुसे	विवाह,	ज्ञानेन्द्रिय	ों, कर्मेन्द्रियों तथा पंचीकरण-क्रि	याद्वारा सृष्टिकी
शापके	कारण पाण्डुका सन्तानोत्पादनमें असमर्थ होन	ा, मन्त्र-	उत्पत्तिक	ज वर्णन	१६३
प्रयोगस्	में कुन्ती और माद्रीका पुत्रवती होना, पाण्डु	की मृत्यु		, रजोगुण और तमोगुणका वर्णन	
और पाँ	चों पुत्रोंको लेकर कुन्तीका हस्तिनापुर आ	ना १२३	_	गरस्पर मिश्रीभावका वर्णन, देवी	
७- धृतराष्ट्र	ट्का युधिष्ठिरसे दुर्योधनके पिण्डदानहेतु धन	मॉॅंगना,	_		
भीमसे	नका प्रतिरोध; धृतराष्ट्र, गान्धारी, कुन्ती, वि	दुर और	१०- देवीके ब	ोजमन्त्रकी महिमाके प्रसंगमें सत्यव्र	 तका आख्यान १७०
	ा वनके लिये प्रस्थान, वनवासी धृतराष्ट्र त [ः]			द्वारा बिन्दुरहित सारस्वत बीजम	
-	मिलनेके लिये युधिष्ठिरका भाइयोंके साथ व			तथा उससे प्रसन्न होकर भगवर्त	
•	ज महाप्रयाण, धृतराष्ट्रसहित पाण्डवोंका व्य			वद्याएँ प्रदान करना	
	<u>गर आना, देवीकी कृपासे व्यासजीद्वारा महाभा</u>	•		, राजस और तामस यज्ञोंका वर्ण	
	रवों-पाण्डवोंके परिजनोंको बुला देना			भौर व्यासजीद्वारा राजा जनमेजय	
	आदिका दावाग्निमें जल जाना, प्रभासक्षेत्रमें य			रेत करना	
	युद्ध और संहार, कृष्ण और बलरामका परमध			नाधारशक्तिसे पृथ्वीका अचल होना त	
	को राजा बनाकर पाण्डवोंका हिमालयपर्वतप			र्त्रतोंको रचना, ब्रह्माजीद्वारा मरीचि	•
	त्को शापकी प्राप्ति, प्रमद्वरा और रुरुका वृ			रना, काश्यपी सृष्टिका वर्णन; ब्रह	
	काटनेसे प्रमद्वराकी मृत्यु, रुरुद्वारा अपर्न			और स्वर्ग आदिका निर्माण; भग	
_	कर उसे जीवित कराना, मणि-मन्त्र-औ			। करना और प्रसन्न होकर भगवती	
_	ा राजा परीक्षित्का सात तलवाले भवनमें			त्राणीके माध्यमसे उन्हें वरदान दे	
		१३३		ात्म्यसे सम्बन्धित राजा ध्रुवस	
	न परीक्षित्को डँसनेके लिये तक्षकका प्रस्थान			गको मृत्युके बाद राजा युधाजित्	
	ता क्श्यपसे भेंट, तक्षकका एक वटवृक्षको			नपने दौहित्रोंके पक्षमें विवाद	
	कर देना और क्श्यपका उसे पुन: हरा- ⁵		१५- राजा यध	ाजित् और वीरसेनका युद्ध, वीरसे	
	१क्षकद्वारा धन देकर कश्यपको वापस क ->			की रानी मनोरमाका अपने पुत्र र	
	सि राजा परीक्षित्की मृत्यु		_	् निके आश्रममें जाना तथा वहीं निवास	-
	ायका राजा बनना और उत्तंककी प्रेरणासे स		1	, का भारद्वाजमुनिके आश्रमपर अ	
	आस्तीकके कहनेसे राजाद्वारा सर्प-सत्र रे		_	् को भेजनेका आग्रह करना, प्रत	
	कमुनिके जन्मकी कथा, कद्रू और विनताद्वार			ो तो ले जाओ'—ऐसा कहना	
•	ं रंगके विषयमें शर्त लगाना और वि		१७- युधाजित्	का अपने प्रधान अमात्यसे परामः	र्रा करना, प्रधान
दासाभ	विकी प्राप्ति, कद्रुद्वारा अपने पुत्रोंको शाप	······	1	् हा इस सन्दर्भमें वसिष्ठ-विश्वामि	
	तृतीय स्कन्ध			ामर्श मानकर युधाजित्का वाप	
१– राजा ज	ानमेजयका ब्रह्माण्डोत्पत्तिविषयक प्रश्न तथ	ग्रा इसके	बालक र्	नुदर्शनको दैवयोगसे कामराज नाम	क बीजमन्त्रकी
उत्तरमें	व्यासजीका पूर्वकालमें नारदजीके साथ हुअ	ा संवाद		गगवतीकी आराधनासे सुदर्शनके	
सुनाना		१४६		ना तथा काशिराजकी कन्या शशिव	
२- भगवर्त	ो आद्याशक्तिके प्रभावका वर्णन	१४८	l भगवतीह	द्वारा सुदर्शनका वरण करनेका अ	गदेश देना १९१

	[6]					
अध	याय विषय पृष्ठ-	संख्या	अध्य	ग्रय विषय	पृष्ठ-सं	ांख्या
१८-	राजकुमारी शशिकलाद्वारा मन–ही–मन सुदर्शनका वरण			चतुर्थ स्कन्ध		
	करना, काशिराजद्वारा स्वयंवरकी घोषणा, शशिकलाका		8-	वसुदेव, देवकी आदिके कष्टोंके कारणके	सम्बन्धमें	
	सखीके माध्यमसे अपना निश्चय माताको बताना		,	जनमेजयका प्रश्न		२३४
१९-	माताका शशिकलाको समझाना, शशिकलाका अपने		2	व्यासजीका जनमेजयको कर्मकी प्रधानता स	मझाना	२३६
	निश्चयपर दृढ़ रहना, सुदर्शन तथा अन्य राजाओंका स्वयंवरमें		₹-	वसुदेव और देवकीके पूर्वजन्मकी कथा	•••••	२३८
	आगमन, युधाजित्ह्वारा सुदर्शनको मार डालनेकी बात		8-	व्यासजीद्वारा जनमेजयको मायाकी प्रबलता र	समझाना	२४१
	कहनेपर केरलनरेशका उन्हें समझाना		4 -	नर–नारायणकी तपस्यासे चिन्तित होकर इन्द्रका	। उनके पास	
२०-	राजाओंका सुदर्शनसे स्वयंवरमें आनेका कारण पूछना			जाना और मोहिनी माया प्रकट करना तथा उससे र्भ	ो अप्रभावित	
	और सुदर्शनका उन्हें स्वप्नमें भगवतीद्वारा दिया गया आदेश			रहनेपर कामदेव, वसन्त और अप्सराओंको भेजना .		२४३
	बताना, राजा सुबाहुका शशिकलाको समझाना, परंतु उसका	•	ξ-	कामदेवद्वारा नर-नारायणके समीप वसन्त ऋ	तुकी सृष्टि,	
	अपने निश्चयपर दृढ़ रहना	१९९	,	नारायणद्वारा उर्वशीकी उत्पत्ति, अप्सराओंद्वार	। नारायणसे	
२१-	राजा सुबाहुका राजाओंसे अपनी कन्याकी इच्छा बताना,			स्वयंको अंगीकार करनेकी प्रार्थना	•••••	२४६
	युधाजित्का क्रोधित होकर सुबाहुको फटकारना तथा अपने		% _	अप्सराओंके प्रस्तावसे नारायणके मनमें ऊ	हापोह और	
	दौहित्रसे शशिकलाका विवाह करनेको कहना, माताद्वारा			नरका उन्हें समझाना तथा अहंकारके कार	ण प्रह्लादके	
	शिशकलाको पुन: समझाना, किंतु शिशकलाका अपने			साथ हुए युद्धका स्मरण कराना		२४९
	निश्चयपर दृढ़ रहना	२०३		्र व्यासजीद्वारा राजा जनमेजयको प्रह्लादकी कथा		
2 2-	शशिकलाका गुप्त स्थानमें सुदर्शनके साथ विवाह, विवाहकी	•		इस प्रसंगमें च्यवनऋषिके पाताललोक जानेव	का वर्णन	२५१
	बात जानकर राजाओंका सुबाहुके प्रति क्रोध प्रकट करना	•	ς-	प्रह्लादजीका तीर्थयात्राके क्रममें नैमिषारण्य पहुँच	ना और वहाँ	
	तथा सुदर्शनका मार्ग रोकनेका निश्चय करना	. २०६		- नर-नारायणसे उनका घोर युद्ध, भगवान् विष्णुः	क्रा आगमन	
२३ -	सुदर्शनका शशिकलाके साथ भारद्वाज-आश्रमके लिये प्रस्थान,			और उनके द्वारा प्रह्लादको नर–नारायणका परिचय र		२५३
	युधाजित् तथा अन्य राजाओंसे सुदर्शनका घोर संग्राम, भगवती		१०-	राजा जनमेजयद्वारा प्रह्लादके साथ नर–नारायप	गके युद्धका	
	सिंहवाहिनी दुर्गाका प्राकट्य, भगवतीद्वारा युधाजित् और			कारण पूछना, व्यासजीद्वारा उत्तरमें संसारके	•	
	शत्रुजित्का वध, सुबाहुद्वारा भगवतीकी स्तुति	२०८		अहंकारका निरूपण करना तथा महर्षि भृगुद्व	• (
5 &-	सुबाहुद्वारा भगवती दुर्गासे सदा काशीमें रहनेका वरदान			विष्णुको शाप देनेकी कथा		२५६
	माँगना तथा देवीका वरदान देना, सुदर्शनद्वारा देवीकी			ु मन्त्रविद्याकी प्राप्तिके लिये शुक्राचार्यका तपस		
	स्तुति तथा देवीका उसे अयोध्या जाकर राज्य करनेका			देवताओंद्वारा दैत्योंपर आक्रमण, शुक्राचार्यक	ने माताद्वारा	
	आदेश देना, राजाओंका सुदर्शनसे अनुमति लेकर अपने-			दैत्योंकी रक्षा और इन्द्र तथा विष्णुको संज्ञाशून	य कर देना,	
	अपने राज्योंको प्रस्थान	. २१२		विष्णुद्वारा शुक्रमाताका वध		२५८
२५-	सुदर्शनका शत्रुजित्की माताको सान्त्वना देना, सुदर्शनद्वारा		१२-	् महात्मा भृगुद्वारा विष्णुको मानवयोनिमें जन्म र	लेनेका शाप	
	अयोध्यामें तथा राजा सुबाहुद्वारा काशीमें देवी दुर्गाकी		1	्रे देना, इन्द्रद्वारा अपनी पुत्री जयन्तीको शुक्राच		
	स्थापना	२१४		अर्पित करना, देवगुरु बृहस्पतिद्वारा शुक्राच		
२६-	नवरात्रव्रत-विधान, कुमारीपूजामें प्रशस्त कन्याओंका वर्णन	. २१६	1	धारणकर दैत्योंका पुरोहित बनना		२६१
२७-	कुमारीपूजामें निषिद्ध कन्याओंका वर्णन, नवरात्रव्रतके			शुक्राचार्यरूपधारी बृहस्पतिका दैत्योंको उपत्		२६६
	माहात्म्यके प्रसंगमें सुशील नामक वणिक्की कथा	२१९	1	ु शुक्राचार्यद्वारा दैत्योंको बृहस्पतिका पाखण्डपूर्ण वृ		
२८-	श्रीरामचरित्रवर्णन	. २२२	1	बुहस्पतिकी मायासे मोहित दैत्योंका उन्हें	-	
२९-	सीताहरण, रामका शोक और लक्ष्मणद्वारा उन्हें			कुद्ध शुक्राचार्यका दैत्योंको शाप देना, बृहस्पतिव		
	सान्त्वना देना			हो जाना, प्रह्लादका शुक्राचार्यजीसे क्षमा म		
3o-	श्रीराम और लक्ष्मणके पास नारदजीका आना और उन्हें		1	शुक्राचार्यका उन्हें प्रारब्धकी बलवत्ता समझा		२६९
7.	नवरात्रव्रत करनेका परामर्श देना, श्रीरामके पूछनेपर			देवता और दैत्योंके युद्धमें दैत्योंकी विजय		
	नारदजीका उनसे देवीकी महिमा और नवरात्रव्रतको विधि		1	भगवतीकी स्तुति, भगवतीका प्रकट होकर दै		
	बतलाना, श्रीरामद्वारा देवीका पूजन और देवीद्वारा उन्हें			जाना, प्रह्लादद्वारा भगवतीकी स्तुति, देवीके आदेः		
	विजयका वरदान देना			पातालगमनपातालग रपुत्त, पंजानग्यापः पातालगमन		२७२
		, , ,	•			, - (

विषय

अध्याय

विषय

पृष्ठ-संख्या

१६-	भगवान् श्रीहरिके विविध अवतारोंका संक्षिप्त वर्णन	२७६	६- भगवान् विष्णु और शिवके साथ महिषासुरका	
१७-	श्रीनारायणद्वारा अप्सराओंको वरदान देना, राजा जनमेजय-		भयानक युद्ध	३१८
	द्वारा व्यासजीसे श्रीकृष्णावतारका चरित सुनानेका		७- महिषासुरको अवध्य जानकर त्रिदेवोंका अपने-अपने	
	निवेदन करना	२७७	लोक लौट जाना, देवताओंकी पराजय तथा महिषासुरका	
१८-	पापभारसे व्यथित पृथ्वीका देवलोक जाना, इन्द्रका देवताओं		स्वर्गपर आधिपत्य, इन्द्रका ब्रह्मा और शिवजीके साथ	
	और पृथ्वीके साथ ब्रह्मलोक जाना, ब्रह्माजीका पृथ्वी तथा		विष्णुलोकके लिये प्रस्थान	३२०
	इन्द्रादि देवताओंसहित विष्णुलोक जाकर विष्णुकी स्तुति		८- ब्रह्माप्रभृति समस्त देवताओंके शरीरसे तेज:पुंजका निकलना	
	करना, विष्णुद्वारा अपनेको भगवतीके अधीन बताना	२७९	और उस तेजोराशिसे भगवतीका प्राकट्य	३२३
१९-	देवताओंद्वारा भगवतीका स्तवन, भगवतीद्वारा श्रीकृष्ण		९- देवताओंद्वारा भगवतीको आयुध और आभूषण समर्पित	
	और अर्जुनको निमित्त बनाकर अपनी शक्तिसे पृथ्वीका		करना तथा उनकी स्तुति करना, देवीका प्रचण्ड अट्टहास	
	भार दूर करनेका आश्वासन देना	२८२	करना, जिसे सुनकर महिषासुरका उद्विग्न होकर अपने प्रधान	
२०−	व्यासजीद्वारा जनमेजयको भगवतीकी महिमा सुनाना		अमात्यको देवीके पास भेजना	३२७
	तथा कृष्णावतारको कथाका उपक्रम	२८५	१०- देवीद्वारा महिषासुरके अमात्यको अपना उद्देश्य बताना तथा	
२१-	देवकीके प्रथम पुत्रका जन्म, वसुदेवद्वारा प्रतिज्ञानुसार		अमात्यका वापस लौटकर देवीद्वारा कही गयी बातें	
	उसे कंसको अर्पित करना और कंसद्वारा उस नवजात		महिषासुरको बताना	३३०
	शिशुका वध	२८८	११- महिषासुरका अपने मन्त्रियोंसे विचार-विमर्श करना	
२ २-	देवकीके छ: पुत्रोंके पूर्वजन्मकी कथा, सातवें पुत्रके		और ताम्रको भगवतीके पास भेजना	333
	रूपमें भगवान् संकर्षणका अवतार, देवताओं तथा दानवोंके		१२- देवीके अट्टहाससे भयभीत होकर ताम्रका महिषासुरके पास	
	अंशावतारोंका वर्णन	२९१	भाग आना, महिषासुरका अपने मन्त्रियोंके साथ पुन: विचार-	
23 -	कंसके कारागारमें भगवान् श्रीकृष्णका अवतार, वसुदेवजीका		विमर्श तथा दुर्धर, दुर्मुख और बाष्कलकी गर्वोक्ति	३३६
	उन्हें गोकुल पहुँचाना और वहाँसे योगमायास्वरूपा कन्याको		१३- बाष्कल और दुर्मुखका रणभूमिमें आना, देवीसे उनका	***
	लेकर आना, कंसद्वारा कन्याके वधका प्रयास, योगमायाद्वारा		वार्तालाप और युद्ध तथा देवीद्वारा उनका वध	३३९
	आकाशवाणी करनेपर कंसका अपने सेवकोंद्वारा नवजात		१४- चिक्षुर और ताम्रका रणभूमिमें आना, देवीसे उनका	```
	शिशुओंका वध कराना	२९४	वार्तालाप और युद्ध तथा देवीद्वारा उनका वध	३४२
58-	श्रीकृष्णावतारकी संक्षिप्त कथा, कृष्णपुत्रका प्रसूतिगृहसे		१५- बिडालाख्य और असिलोमाका रणभूमिमें आना, देवीसे	431
	हरण, कृष्णद्वारा भगवतीको स्तुति, भगवती चण्डिकाद्वारा		उनका वार्तालाप और युद्ध तथा देवीद्वारा उनका वध	३४४
	सोलह वर्षके बाद पुन: पुत्रप्राप्तिका वर देना	२९७	१६- महिषासुरका रणभूमिमें आना तथा देवीसे प्रणय-	200
२५-	व्यासजीद्वारा शाम्भवी मायाकी बलवत्ताका वर्णन, श्रीकृष्ण-		याचना करना	380
	द्वारा शिवजीकी प्रसन्नताके लिये तप करना और शिवजीद्वारा		१७– महिषासुरका देवीको मन्दोदरी नामक राजकुमारीका	200
	उन्हें वरदान देना	३०१	आख्यान सुनाना	३५०
	पंचम स्कन्ध		१८- दुर्धर, त्रिनेत्र, अन्थक और महिषासुरका वध	343
8 –	व्यासजीद्वारा त्रिदेवोंकी तुलनामें भगवतीकी उत्तमताका		१९- देवताओंद्वारा भगवतीकी स्तुति	२५२ ३५६
,	वर्णन	३०५	२०– देवीका मणिद्वीप पधारना तथा राजा शत्रुघ्नका	7-19
ə -	महिषासुरके जन्म, तप और वरदान-प्राप्तिकी कथा	306	भूमण्डलाधिपति बनना	३५९
	महिषासुरका दूत भेजकर इन्द्रको स्वर्ग खाली करनेका	7.5	२१ - शुम्भ और निशुम्भको ब्रह्माजीके द्वारा वरदान, देवताओंके	4-17
*	आदेश देना, दूतद्वारा इन्द्रका युद्धहेतु आमन्त्रण प्राप्तकर		साथ उनका युद्ध और देवताओंकी पराजय	३६२
	महिषासुरका दानववीरोंको युद्धके लिये सुसज्जित होनेका		२२- देवताओंद्वारा भगवतीकी स्तुति और उनका प्राकट्य	३६४
	आदेश देना	३१०	२३- भगवतीके श्रीविग्रहसे कौशिकीका प्राकट्य, देवीकी	
8-	इन्द्रका देवताओं तथा गुरु बृहस्पतिसे परामर्श करना तथा	7) -	कालिकारूपमें परिणति, चण्ड-मुण्डसे देवीके अद्भुत	
-	बृहस्पतिद्वारा जय-पराजयमें दैवकी प्रधानता बतलाना	३१२	सौन्दर्यको सुनकर शुम्भका सुग्रीवको दूत बनाकर भेजना,	
ل _	इन्द्रका ब्रह्मा, शिव और विष्णुके पास जाना; तीनों	111	जगदम्बाका विवाहके विषयमें अपनी शर्त बताना	३६७
Н	induism Discord Server https://disc.	gg/dh	२४- शुम्भका धुमलोचनको देवीके पास भेजन और धूमलोचनका arma I MADE WITH LOVE BY Avinash देवीको समझानका प्रयास करना	h/Sha
	।बडाल आर ताम्रका पराजित करना	- इ१५	दवाका समझानका प्रयास करना	३७०

विषय

८- इन्द्राणीको बृहस्पतिकी शरणमें जानकर नहुषका क्रुद्ध होना,

देवताओंका नहुषको समझाना, बृहस्पतिके परामर्शसे इन्द्राणीका

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या

विषय

धूम्रलोचनका भस्म होना तथा शुम्भका चण्ड-मुण्डको

२५- भगवती काली और धूम्रलोचनका संवाद, कालीके हुंकारसे

अध्याय

	युद्धहेतु प्रस्थानका आदेश देना	३७३	नहुषसे समय माँगना, देवताओंका भगवान् विष्णुके पास	
२६-	भगवती अम्बिकासे चण्ड-मुण्डका संवाद और युद्ध,		जाना और विष्णुका उन्हें देवीको प्रसन्न करनेके लिये	
	देवी कालिकाद्वारा चण्ड-मुण्डका वध	३७६	अश्वमेधयज्ञ करनेको कहना, बृहस्पतिका शचीको भगवतीकी	
२७-	शुम्भका रक्तबीजको भगवती अम्बिकाके पास भेजना		आराधना करनेको कहना, शचीकी आराधनासे प्रसन्न होकर	
	और उसका देवीसे वार्तालाप	३७९	देवीका प्रकट होना और शचीको इन्द्रका दर्शन होना	४२३
٦٧-	देवीके साथ रक्तबीजका युद्ध, विभिन्न शक्तियोंके साथ		९– शचीका इन्द्रसे अपना दु:ख कहना, इन्द्रका शचीको सलाह देना	
	भगवान् शिवका रणस्थलमें आना तथा भगवतीका उन्हें		कि वह नहुषसे ऋषियोंद्वारा वहन की जा रही पालकीमें आनेको कहे,	
	दूत बनाकर शुम्भके पास भेजना, भगवान् शिवके सन्देशसे		नहुषका ऋषियोंद्वारा वहन की जा रही पालकीमें सवार होना और	
	दानवोंका क्रुद्ध होकर युद्धके लिये आना	३८२	शापित होकर सर्प होना तथा इन्द्रका पुन: स्वर्गाधिपति बनना	४२६
२९-	रक्तबीजका वध और निशुम्भका युद्धक्षेत्रके लिये प्रस्थान	४८६	१०- कर्मकी गहन गतिका वर्णन तथा इस सम्बन्धमें भगवान्	
₹0-	देवीद्वारा निशुम्भका वध	३८७	श्रीकृष्ण और अर्जुनका उदाहरण	४३१
३१-	शुम्भका रणभूमिमें आना और देवीसे वार्तालाप करना,		११- युगधर्म एवं तत्सम्बन्धी व्यवस्थाका वर्णन	४३३
	भगवती कालिकाद्वारा उसका वध, देवीके इस उत्तम		१२- पवित्र तीर्थोंका वर्णन, चित्तशुद्धिकी प्रधानता तथा इस	
	चरित्रके पठन और श्रवणका फल	३९०	सम्बन्धमें विश्वामित्र और विसष्ठके परस्पर वैरकी कथा,	
३ २-	देवीमाहात्म्यके प्रसंगमें राजा सुरथ और समाधि		राजा हरिश्चन्द्रका वरुणदेवके शापसे जलोदरग्रस्त होना	४३५
	वैश्यको कथा	३९५	१३- राजा हरिश्चन्द्रका शुनःशेपको यज्ञीय पशु बनाकर	
	मुनि सुमेधाका सुरथ और समाधिको देवीकी महिमा बताना	३९८	यज्ञ करना, विश्वामित्रसे प्राप्त वरुणमन्त्रके जपसे	
	मुनि सुमेधाद्वारा देवीकी पूजा-विधिका वर्णन	४०१	शुन:शेपका मुक्त होना, परस्पर शापसे विश्वामित्र और	
३५-	सुरथ और समाधिकी तपस्यासे प्रसन्न भगवतीका		विसष्टका बक तथा आडी होना	४३८
	प्रकट होना और उन्हें इच्छित वरदान देना	४०३	१४- राजा निमि और वसिष्ठका एक-दूसरेको शाप देना,	•
	षष्ठ स्कन्ध		विसष्ठका मित्रावरुणके पुत्रके रूपमें जन्म लेना	४४१
9 –	त्रिशिराकी तपस्यासे चिन्तित इन्द्रद्वारा तपभंगहेतु		१५- भगवतीकी कृपासे निमिको मनुष्योंके नेत्र-पलकोंमें वासस्थान	•
,	अप्सराओंको भेजना	४०५	मिलना तथा संसारी प्राणियोंकी त्रिगुणात्मकताका वर्णन	४४४
ə –	इन्द्रद्वारा त्रिशिराका वध, क्रुद्ध त्वष्टाद्वारा अथर्ववेदोक्त	9 - (१६- हैहयवंशी क्षत्रियोंद्वारा भृगुवंशी ब्राह्मणोंका संहार	४४६
`	मन्त्रोंसे हवन करके वृत्रासुरको उत्पन्न करना और		१७- भगवतीकी कृपासे भार्गव-ब्राह्मणीकी जंघासे तेजस्वी	
	उसे इन्द्रके वधके लिये प्रेरित करना	४०७	बालककी उत्पत्ति, हैहयवंशी क्षत्रियोंकी उत्पत्तिकी कथा	४४९
₹-	वृत्रासुरका देवलोकपर आक्रमण, बृहस्पतिद्वारा इन्द्रकी		१८- भगवती लक्ष्मीद्वारा घोड़ीका रूप धारणकर तपस्या करना	४५२
·	भर्त्सना करना और वृत्रासुरको अजेय बतलाना, इन्द्रकी		१९– भगवती लक्ष्मीको अश्वरूपधारी भगवान् विष्णुके दर्शन	
	पराजय, त्वष्टाके निर्देशसे वृत्रासुरका ब्रह्माजीको		और उनका वैकुण्ठगमन	४५५
	प्रसन्न करनेके लिये तपस्यारत होना	४१०	२०- राजा हरिवर्माको भगवान् विष्णुद्वारा अपना हैहयसंज्ञक	
8-	तपस्यासे प्रसन्न होकर ब्रह्माजीका वृत्रासुरको वरदान		पुत्र देना, राजाद्वारा उसका 'एकवीर' नाम रखना	४५७
	देना, त्वष्टाकी प्रेरणासे वृत्रासुरका स्वर्गपर आक्रमण		२१- आखेटके लिये वनमें गये राजासे एकावलीकी सखी	
	करके अपने अधिकारमें कर लेना, इन्द्रका पितामह ब्रह्मा		यशोवतीकी भेंट, एकावलीके जन्मकी कथा	४६०
	और भगवान् शंकरके साथ वैकुण्ठधाम जाना	४१२	२२- यशोवतीका एकवीरसे कालकेतुद्वारा एकावलीके अपहृत	
4 -	भगवान् विष्णुकी प्रेरणासे देवताओंका भगवतीकी स्तुति		होनेकी बात बताना	४६३
	करना और प्रसन्न होकर भगवतीका वरदान देना	४१५	२३- भगवतीके सिद्धिप्रदायक मन्त्रसे दीक्षित एकवीरद्वारा	
ξ-	भगवान् विष्णुका इन्द्रको वृत्रासुरसे सन्धिका परामर्श देना,		कालकेतुका वध, एकवीर और एकावलीका विवाह तथा	
	ऋषियोंकी मध्यस्थतासे इन्द्र और वृत्रासुरमें सन्धि, इन्द्रद्वारा		हैहयवंशकी परम्परा	४६५
	छलपूर्वक वृत्रासुरका वध	४१८	२४– धृतराष्ट्रके जन्मकी कथा	४६९
७ –	त्वष्टाका वृत्रासुरकी पारलौकिक क्रिया करके इन्द्रको शाप		२५- पाण्डु और विदुरके जन्मकी कथा, पाण्डवोंका जन्म,	
	देना, इन्द्रको ब्रह्महत्या लगना, नहुषका स्वर्गाधिपति		पाण्डुकी मृत्यु, द्रौपदीस्वयंवर, राजसूययज्ञ, कपटद्यूत तथा	
	बनना और इन्द्राणीपर आसक्त होना	४२१	वनवास और व्यासजीके मोहका वर्णन	४७१

[१०]						
अध्याय	विषय	पृष्ठ-संर	<u>ब्या</u>	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
देना, राज निश्चय २७- वानरमुख परस्पर श २८- भगवान् [करना, मु	ारद और पर्वतमुनिका एक-दूसे जकुमारी दमयन्तीका नारदसे विवाह नारदसे दमयन्तीका विवाह, नारद तथ् ॥पमोचन विष्णुका नारदजीसे मायाकी अजेयत पृनि नारदको मायावश स्त्रीरूपकी प्र १ध्वजका उनसे प्रणय-निवेदन करन	इ करनेका था पर्वतका गका वर्णन प्राप्ति तथा	808 808	पुत्र-पौत्रोंक शोक और ३०- राजा ताल विष्णुके प्र नारदसे मा ३१- व्यासजीक	ध्वजसे स्त्रीरूपधारी नारदजीक ती उत्पत्ति और युद्धमें उन सबकी भगवान् विष्णुकी कृपासे पुन् ध्वजका विलाप और ब्राह्मणवाबोधनसे उन्हें वैराग्य होना, ध्रायाके प्रभावका वर्णन करना . जिस्सा जनमेजयसे भगवत्ना	मृत्यु, नारदजीका ।: स्वरूपबोध ४८२ वेशधारी भगवान् गगवान् विष्णुका ४८५ विकी महिमाका
				- सूची -चित्र)		
विषय		 पृष्ठ-संर	<u>ब्या</u>	विषय		 पृष्ठ-संख्या
 १- आदिशत्ति	ज्ञ भगवती महागौरी	आवरण-	—— -पष्ठ	८- भगवान ह		 बह्याजीको प्रदान
२- राजराजेख ३- देवताओंद्व	वरी श्रीललिताम्बा इरा सिंहवाहिनी श्रीदुर्गाकी स्तुति जनक तथा परम विरक्त श्रीशुकदे		े १ २ ३५	करना ९- श्रीराम, र्श्र	ोलक्ष्मण, श्रीभरत तथा श्रीश	२६३ त्रुघ्न—अवधकी
	पुत्र महाराज जनमेजयके सर्पयज्ञमें		` `		ाका देवताओंको दर्शन देना	
_ `			३६		दूत सुग्रीवका भगवती कौशिकी	
	गरागारमें भगवती योगमायाका प्राक				ममें नर-नारायणकी तपस्या	
७- भक्तवत्सर	त श्रीरामकी जटायुपर कृपा	•••••	२३०	१३-शिव-पार्वत	तीद्वारा श्रीकृष्णको वरदान	४२८
			खा-	-चित्र)		
	द्भारा मुनियोंको श्रीमदेवीभागवत सुनान		38		पेटसे जुड़्वाँ सन्तति निकल	
	भीकृष्ण और जाम्बवान्का युद्ध		38	_	गंगाजीको रोका जाना	
`	द्वारा श्रीकृष्णजीको स्यमन्तकमणि ए 	्व जाम्बवता	7.0		। राजा शन्तनुको उनका पुत्र	
	ना ग स्यमन्तकमणि धारणकर जाम्ब	 ਕਰੀਕੇ ਸਾਅ	३९		का राजा शन्तनुसे कन्यादानव विवाह न करनेकी प्रतिज्ञा	
	त स्यमनाकमाण वारणकर जाम्ब के समीप आना		३९		विवाह न करनका प्रापन्ना इनिके शापसे शोकाकुल पाप	
पतुष्पणा ५-महर्षि वरि	सष्ठजीका इलाको पुरुष बनानेके वि	 नये ईश्वरकी	47		कुन्तीसे पुत्रोत्पत्तिहेतु कहना	•
शरणमें ज	ाना		४०		रा पाण्डवोंको अपनी सन्तान	
	ज्यजी और मुनिवर अगस्त्य		४३		पासे व्यासजीद्वारा युद्धमें मृत	
	रा व्यासजीसे उनकी चिन्ताका कारण		५७		ना	
	भको देवीके वाग्बीजमन्त्रका दर्शन		६६	२९-राजा परीवि	क्षेत्का मुनिके गलेमें मृत स	र्प डालना १३१
	रा भगवान् विष्णुकी स्तुति		६८	٠,	प्रमद्वराको जीवितकर रुरुको	
	ोका भगवान् विष्णुके शरीरसे निकल		७०		द्गरा अपनी विषाग्निसे वृक्षव	
	वष्णुद्वारा मधु-कैटभका वध		७६		जीद्वारा राजा जनमेजयको म	
	ो शिवजीद्वारा पुत्रप्राप्तिका वरदान .		১৩		गके विषयमें कद्रू और विन	
	ग्रुम्न तथा उनके मन्त्रियों आदिव —				नमृतकलशका चुराया जाना. ८२ — — —	
	ोना केटी ना सर्वास		८३	_	निके द्वारा पत्नी जरत्कारुका	
	देवीकी प्रार्थना नीद्वारा शुकदेवजीसे विवाहहेतु कहन		८४		परिणत ब्रह्मा, विष्णु एवं मह ष्टि	
	गाद्वारा शुकदवजास ।ववाहरुतु करन भगवान् विष्णुके समक्ष महालक्ष्मीका !		८८ ९३	पृश्यापूर्ण दृ २/९– ऋषि गोधि	ाष्ट्र लिद्वारा देवदत्तको शाप देना	०।००
	मण्याम् पिञ्जुक समक्ष महारादमाका : इ. हारपालोंद्वारा श्रीशुकदेवजीको रोव		ऽर ९८		सत्यव्रतमुनिसे प्रश्न करना	
	न अन्त:पुरमें शुकदेवजीका ध्यानमग				तात्वन्नतानुनिस त्रस्य कार्याः क्रो स्वप्नमें जगदम्बाका दर्शन	
	प्तरा शुकदेवजीको उपदेश देना				एवं युधाजित्का संवाद	

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या

विषय

४१- युवाजित्का सुबाहुपर क्राव करना २०३	७८-दवताञाक तज:पुजस मगवताका प्राकटय ३२५
४२-देवीद्वारा शत्रुजित् और युधाजित्का वध २१०	७९-देवताओंद्वारा भगवतीकी स्तुति ३२८
४३- सुबाहु एवं सुदर्शनद्वारा देवीकी स्तुति २१२	८०-महिषासुरका अपने मन्त्रियोंसे विचार-विमर्श करना ३३३
४४- सुशील वैश्यको देवीका दर्शन २२१	८१–राक्षसोंका युद्धक्षेत्रसे भागकर महिषासुरसे रक्षाकी प्रार्थना
४५-माता जानकीद्वारा लक्ष्मणजीको श्रीरामकी सहायताके लिये	करना ३४७
जानेका आदेश देना २२३	८२-महिषासुर एवं भगवतीकी वार्ता ३४८
४६-कपटवेषमें रावणका सीताजीके सामने आना २२४	८३–देवताओंद्वारा जगदम्बाकी स्तुति ३५६
४७- घायल जटायुद्वारा श्रीराम एवं लक्ष्मणको सीताजीका समाचार	८४-शुम्भ-निशुम्भको ब्रह्माजीका वरदान ३६३
देना २२६	८५-भगवतीके श्रीविग्रहसे कौशिकीका प्रकट होना ३६७
४८-लक्ष्मणजीके द्वारा श्रीरामको सान्त्वना प्रदान करना २२७	८६-भगवतीसे शुम्भासुरके दूत सुग्रीवकी वार्ता ३६९
४९-देवर्षि नारदजीद्वारा श्रीरामको देवीके नवरात्रव्रतके लिये	८७- शुम्भद्वारा धूम्रलोचनको रणक्षेत्रमें जानेका आदेश देना ३७२
कहना २२८	८८-कालिकाद्वारा चण्ड-मुण्डका वध ३७८
५०- श्रीराम एवं लक्ष्मणको जगदम्बाका दर्शन २३२	८९-देवीद्वारा शिवजीको दूत बनाकर शुम्भके पास भेजना ३८३
५१-ब्रह्माजीद्वारा कश्यपजीको यदुवंशमें जन्म लेनेका शाप	९०-देवीद्वारा रक्तबीजका वध ३८६
देना २३९	९१-चण्डिकाद्वारा निशुम्भका वध ३८९
५२-दितिका अदिति और इन्द्रको शाप देना २४१	९२-यज्ञाग्निसे वृत्रासुरका प्रकट होना ४०९
५३– इन्द्रद्वारा तपस्यारत नर–नारायणको भयभीत करनेका प्रयास	९३-वृत्रासुरद्वारा ब्रह्माजीकी स्तुति ४१२
करना २४४	९४-इन्द्रपत्नी शचीको भगवतीका दर्शन ४२६
५४-अप्सराओंद्वारा नारायणसे अपनी सेवामें रखनेकी प्रार्थना	९५-नहुषद्वारा महर्षि अगस्तिके सिरका पैरसे स्पर्श करना ४३०
करना २४८	९६-महर्षि वसिष्ठ एवं विश्वामित्रका युद्ध समाप्त करनेहेतु
५५- नर-नारायण और प्रह्लादका युद्ध २५४	ब्रह्माजीका उनके समक्ष प्रकट होना ४४०
५६-शुक्राचार्यद्वारा दैत्योंको सहायताका वचन देना २५८	९७-राजा निमिद्वारा महर्षि वसिष्ठजीसे यज्ञ करानेकी
५७- शुक्राचार्यका भगवान् शंकरसे देवताओंकी पराजयका वर	प्रार्थना करना ४४२
माँगना २५९	९८-राजा निमिद्वारा महर्षि वसिष्ठजीको शाप देना ४४३
५८-शुक्राचार्यकी माताद्वारा देवताओंको निद्राके वशीभूत कर	९९-राजा निमिको भगवतीद्वारा वरप्राप्ति४४४
देना २६०	१००-राजा निमिकी देहके मन्थनसे बालककी उत्पत्ति ४४५
५९-भृगुद्वारा विष्णुजीको शाप देना २६१	१०१-भृगुकुलकी नारियोंको स्वप्नमें देवीका दर्शन ४४९
६०- जयन्तीद्वारा शुक्राचार्यकी सेवा करना २६२	१०२-जंघासे उत्पन्न बालकके तेजसे हैहयोंकी नेत्रज्योति
६१-मायाविमोहित राक्षसोंद्वारा शुक्राचार्यका अपमान करना २६९	लुप्त होना ४५०
६२-शुक्राचार्यद्वारा प्रह्लाद आदिको आश्वस्त करना २७१	१०३-भगवान् विष्णुके पास शंकरजीके दूतका आगमन ४५५
६३-प्रह्लादजीद्वारा देवीकी स्तुति २७४	१०४-राजा हरिवर्माको भगवान् विष्णुद्वारा पुत्रप्राप्तिका वरदान४५८
६४-अप्सराओंद्वारा इन्द्रसे नर-नारायणका वृत्तान्त बतलाना २७८	१०५-एकवीरद्वारा यशोवतीसे विलापका कारण पूछना ४६१
६५- ब्रह्माजीद्वारा भगवान् विष्णुकी स्तुति २८१	१०६-एकवीर और कालकेतुका युद्ध ४६७
६६-ब्रह्मा आदि देवताओंद्वारा देवीकी स्तुति २८३	१०७-राजा रैभ्यद्वारा एकवीरसे एकावलीका विवाह कराना ४६८
६७- कंसद्वारा देवकीको मारनेका उद्यम २८७	१०८-देवर्षि नारदजी एवं व्यासजीका संवाद ४६९
६८-वसुदेवजीद्वारा प्रथम पुत्रका कंसको सौंपना २९०	१०९-वानरमुख देवर्षि नारदजीकी सेवा करती राजकुमारी दमयन्ती ४७८
६९-हिरण्यकशिपुद्वारा अपने पुत्रोंको शाप देना २९२	११०-पर्वतमुनिद्वारा देवर्षि नारदजीको शापसे मुक्त करना ४७८
७०-श्रीकृष्णको लेकर वसुदेवका कारागारसे निकलना २९५	१११-भगवान् विष्णु एवं नारदजीका संवाद ४८०
७१-भगवतीरूपी कन्याका आकाशमें चला जाना २९६	११२-राजा तालध्वजका स्त्रीरूपधारी नारदजीसे विवाहका
७२-कालयवनद्वारा श्रीकृष्णका पीछा करना २९८	प्रस्ताव करना ४८१
७३– मुचुकुन्दकी दृष्टि पड़ते ही कालयवनका भस्म हो जाना २९९	११३-स्त्रीरूपधारी देवर्षि नारदजी एवं उनका परिवार ४८३

११४-वृद्ध ब्राह्मणरूपधारी भगवान् विष्णुद्वारा स्त्रीरूपधारी

११५-पत्नीके वियोगमें दुःखी राजा तालध्वजको भगवान्

देवर्षि नारदजीको प्रबोध ४८४

विष्णु एवं देविष नारदजीद्वारा समझाना ४८५

७४- श्रीकृष्णद्वारा भगवतीकी स्तुति ३००

७५-चिताग्निसे महिषासुर और रक्तबीजकी उत्पत्ति ३१०

७६-इन्द्रका बृहस्पतिसे विचार-विमर्श करना...... ३१४

७७-देवताओंद्वारा भगवान् विष्णुकी स्तुति ३२४ ।

सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-

श्रीमद्देवीभागवतमाहात्म्य

पुराणं परमोत्तमम् । त्रैलोक्यजननी साक्षाद् गीयते यत्र शाश्वती।। देवीभागवतं नाम

श्रीमद्भागवतं यस्तु

है, वह ऐश्वर्य तथा ज्ञानसे सम्पन्न हो जाता है।[श्रीमद्देवीभागवत]

तावत्

यस्तु भागवतं देव्याः पठेद् भक्त्या शृणोति वा । धर्ममर्थं च कामं च मोक्षं च लभते नरः॥

पूजितं यद्गृहे नित्यं श्रीभागवतपुस्तकम्। तद्गृहं तीर्थभूतं हि वसतां पापनाशकम्।।

क्लेशावहं नृणामुपसर्गमहातमः। यावन्नैवोदयं प्राप्तो देवीभागवतोष्णगुः॥

सुधां पिबन्नेक एव नरः स्यादजरामरः।देव्याः कथामृतं कुर्यात् कुलमेवाजरामरम्॥ अष्टादशपुराणानां मध्ये सर्वोत्तमं परम्। देवीभागवतं नाम धर्मकामार्थमोक्षदम्॥ ये शृण्वन्ति सदा भक्त्या देव्या भागवतीं कथाम् । तेषां सिद्धिर्न दूरस्था तस्मात् सेव्या सदा नृभि:॥ दिनमर्धं तदर्धं वा मुहुर्तं क्षणमेव वा । ये शृण्वन्ति नरा भक्त्या न तेषां दुर्गति: क्वचित्।। तावद् गर्जन्ति तीर्थानि पुराणानि व्रतानि च। यावन्न श्रुयते सम्यग् देवीभागवतं नरै:॥ तावत् पापाटवी नृणां क्लेशदादभ्रकण्टका। यावन्न परशुः प्राप्तो देवीभागवताभिधः॥

> इदमिखलकथानां सारभूतं पुराणं निखिलनिगमतुल्यं सप्रमाणानुविद्धम्। पठित परमभावाद्यः शृणोतीह भक्त्या स भवित धनवान्वै ज्ञानवान्मानवोऽत्र॥

भगवतीकी महिमा गायी गयी है। जो श्रीमद्देवीभागवतके आधे श्लोक या चौथाई श्लोकको भी प्रतिदिन सुनता या पढता है, वह परमगतिको प्राप्त होता है। जिस घरमें नित्य श्रीमद्देवीभागवतग्रन्थका पूजन किया जाता है, वह घर तीर्थस्वरूप हो जाता है तथा उसमें निवास करनेवाले लोगोंके पापोंका नाश हो जाता है। जो व्यक्ति भक्ति-भावसे देवीके इस भागवतपुराणका पाठ अथवा श्रवण करता है; वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त कर लेता है। अमृतके पानसे तो केवल एक ही मनुष्य अजर-अमर होता है, किंतु भगवतीका कथारूप अमृत सम्पूर्ण कुलको ही अजर-अमर बना देता है। सभी अठारह पुराणोंमें यह श्रीमद्देवीभागवतपुराण सर्वश्रेष्ठ है और धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षको प्रदान करनेवाला है। जो लोग सदा भक्ति-श्रद्धापूर्वक श्रीमद्देवीभागवतकी कथा सुनते हैं, उन्हें सिद्धि प्राप्त होनेमें रंचमात्र भी विलम्ब नहीं होता, इसलिये मनुष्योंको इस पुराणका सदा पठन-श्रवण करना चाहिये। पूरे दिन, दिनके आधे समयतक, चौथाई समयतक, मुहूर्तभर अथवा एक क्षण भी जो लोग भक्तिपूर्वक इसका श्रवण करते हैं, उनकी कभी भी दुर्गति नहीं होती। समस्त तीर्थ, पुराण और व्रत [अपनी श्रेष्ठताका वर्णन करते हुए] तभीतक गर्जना करते हैं, जबतक मनुष्य श्रीमद्देवीभागवतका सम्यक् रूपसे श्रवण नहीं कर लेते। मनुष्योंके लिये पापरूपी अरण्य तभीतक दु:खप्रद एवं कंटकमय रहता है, जबतक श्रीमद्देवीभागवतरूपी परशु (कुठार) उपलब्ध नहीं हो जाता। मनुष्योंको उपसर्ग (ग्रहण)-रूपी घोर अन्धकार तभीतक कष्ट पहुँचाता है, जबतक श्रीमद्देवीभागवतरूपी सूर्य उनके सम्मुख उदित नहीं हो जाता। इस संसारमें जो मनुष्य विशेष श्रद्धाके साथ उच्च विचारोंसे युक्त होकर सम्पूर्ण पुराणोंके सारस्वरूप, समस्त वेदोंकी तुलना करनेवाले तथा नानाविध प्रमाणोंसे परिपूर्ण इस श्रीमद्वीभागवतपुराणका पाठ करता है तथा इसका भक्तिपूर्वक श्रवण करता

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dbarma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sh

श्रीमद्वीभागवत नामक पुराण सभी पुराणोंमें अतिश्रेष्ठ है, जिसमें तीनों लोकोंकी जननी साक्षात् सनातनी

पठेद्वा शृण्यादिप । श्लोकार्धं श्लोकपादं वा स याति परमां गतिम्।।

 श्रीमद्देवीभागवतसुभाषितसुधा * अङ्क] 83 *********************** ******************* श्रीमद्देवीभागवतसुभाषितसुधा येन केनाप्युपायेन कालातिवाहनं स्मृतम्। धर्माचरणसे व्याधि नष्ट होती है और उससे आयु व्यसनैरिह मूर्खाणां बुधानां शास्त्रचिन्तनैः॥ स्थिर होती है। (२।१०।३७) जिस किसी प्रकारसे समय तो बीतता ही रहता है, मूर्खा यत्र सुगर्विष्ठा दानमानपरिग्रहै:। किंतु मूर्खोंका समय व्यर्थ दुर्व्यसनोंमें बीतता है और तस्मिन्देशे न वस्तव्यं पण्डितेन कथञ्चन॥ विद्वानोंका समय शास्त्रचिन्तनमें जाता है। (१।१।१२) जहाँ दान, मान तथा परिग्रहसे मूर्खलोग महान् मूर्खेण सह संयोगो विषादपि सुदुर्जरः। गौरवशाली माने जाते हैं, उस देशमें पण्डितजनको किसी विज्ञेन सह संयोगः सुधारससमः स्मृतः॥ प्रकार भी नहीं रहना चाहिये। (३।१०।४१) मुर्खके साथ स्थापित किया गया सम्पर्क विषसे भी द्रव्यश्ब्द्धः क्रियाश्ब्द्धिर्मन्त्रश्ब्द्धश्च भूमिप। अधिक अनिष्टकर होता है, इसके विपरीत विद्वानोंका भवेद्यदि तदा पूर्णं फलं भवति नान्यथा॥ सम्पर्क पीयूषरसके तुल्य माना गया है। (१।६।५) यदि द्रव्यशुद्धि, क्रियाशुद्धि और मन्त्रशुद्धिके साथ न गृहं बन्धनागारं बन्धने न च कारणम्। कर्म सम्पन्न होता है, तब पूर्ण फलकी प्राप्ति अवश्य मनसा यो विनिर्मुक्तो गृहस्थोऽपि विमुच्यते॥ होती है; अन्यथा नहीं होती। (३।१२।७) गृह बन्धनागार नहीं है और न बन्धनका कारण ही अन्यायोपार्जितेनैव द्रव्येण सुकृतं कृतम्। न कीर्तिरिह लोके च परलोके न तत्फलम्॥ है। जो मनसे बन्धनमुक्त है, वह गृहस्थ-आश्रममें रहते हुए भी मुक्त हो जाता है।(१।१४।५५) अन्यायके द्वारा उपार्जित किये गये धनसे यदि कामः क्रोधः प्रमादश्च शत्रवो विविधाः स्मृताः। पुण्य कार्य किया जाता है तो इस लोकमें यशकी प्राप्ति बन्धुः सन्तोष एवास्य नान्योऽस्ति भुवनत्रये॥ नहीं होती और परलोकमें उसका कोई फल भी नहीं काम, क्रोध, प्रमाद आदि अनेक प्रकारके शत्रु बताये मिलता। (३।१२।८) आर्तस्य रक्षणे पुण्यं यज्ञाधिकमुदाहृतम्। गये हैं; किंतु व्यक्तिका सच्चा बन्धु तो एकमात्र सन्तोष ही भयत्रस्तस्य दीनस्य विशेषफलदं स्मृतम्॥ है; तीनों लोकोंमें दूसरा कोई भी नहीं है।(१।१७।४७) किसी दु:खी प्राणीकी रक्षा करनेमें यज्ञ करनेसे भी भ्रमन्सर्वेषु तीर्थेषु स्नात्वा स्नात्वा पुनः पुनः। निर्मलं न मनो यावत्तावत्सर्वं निरर्थकम्॥ अधिक पुण्य बताया गया है। भयभीत तथा दीनकी रक्षाको तो और भी अधिक फलदायक कहा गया है।(३।१५।५७) सभी तीर्थोंमें घूमते हुए वहाँ बार-बार स्नान करके भी यदि मन निर्मल नहीं हुआ तो वह सब व्यर्थ वृथा तीर्थं वृथा दानं वृथाध्ययनमेव च। हो जाता है। (१।१८।३८) लोभमोहावृतानां वै कृतं तदकृतं भवेत्।। शत्रुर्मित्रमुदासीनो भेदाः सर्वे मनोगताः। लोभ तथा मोहसे घिरे हुए लोगोंका तीर्थ, दान, एकात्मत्वे कथं भेदः सम्भवेद् द्वैतदर्शनात्॥ अध्ययन—सब व्यर्थ हो जाता है; उनका किया हुआ वह शत्रुता, मित्रता या उदासीनताके सभी भेदभाव मनमें सारा कर्म न करनेके समान हो जाता है।(३।१६।५५) ही रहते हैं। एकात्मभाव होनेपर भेदभाव नहीं रहता; यह धर्मो जयति नाधर्मः सत्यं जयति नानृतम्। तो द्वैतभावसे ही उत्पन्न होता है।(१।१८।४१) धर्मकी जय होती है, अधर्मकी नहीं। सत्यकी जय प्रयत्नश्चोद्यमे कार्यो यदा सिद्धिं न याति चेत्॥ होती है, असत्यकी नहीं। (३।१९।५९) तदा दैवं स्थितं चेति चित्तमालम्बयेद् बुधः। स्वकर्मफलयोगेन प्राप्य दुःखमचेतनः। निमित्तकारणे वैरं करोत्यल्पमतिः किल॥ प्रयत्नपूर्वक उद्यम तो करना ही चाहिये, यदि सफलता न मिले तो बुद्धिमान् मनुष्य मनमें विश्वास कर ले कि दैव अपने द्वारा उपार्जित कर्मफल भोगनेमें दु:ख प्राप्त यहाँ प्रबल है। (२।८।३९-४०) होनेके कारण अज्ञानी तथा अल्पबुद्धिवाला प्राणी निमित्त **धर्मेण हन्यते व्याधिर्येनायुः शाश्वतं भवेत्।।** कारणके प्रति शत्रुता करने लगता है। (३।२०।४४)

 * सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरैः *
 [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-********************** दुःखे दुःखाधिकान्पश्येत्सुखे पश्येत्सुखाधिकम्। बुद्धि देनेवाला, पापकी प्रेरणा देनेवाला तथा पाप करनेवालोंका आत्मानं शोकहर्षाभ्यां शत्रुभ्यामिव नार्पयेत्॥ पक्ष लेनेवाला भी निश्चय ही पापकर्ताके समान पापभाजन मनुष्यको चाहिये कि दु:खकी स्थितिमें अधिक होता है।(६।७।६) दु:खवालोंको तथा सुखकी स्थितिमें अधिक सुख-परोपदेशे कुशला प्रभवन्ति नराः किल। वालोंको देखे; अपने आपको हर्ष-शोकरूपी शत्रुओंके कर्ता चैवोपदेष्टा च दुर्लभः पुरुषो भवेत्॥ लोग दूसरोंको उपदेश देनेमें बहुत कुशल होते हैं, अधीन न करे। (३।२५।७) यथेन्द्रवारुणं पक्वं मिष्टं नैवोपजायते। परंतु उपदेश देनेवाला और उसका पालन करनेवाला भावदुष्टस्तथा तीर्थे कोटिस्नातो न शुध्यति॥ पुरुष दुर्लभ होता है।(६।८।१३) जिस प्रकार इन्द्रवारुणका फल पक जानेपर भी मीठा यादृशं कुरुते कर्म तादृशं फलमाप्नुयात्। नहीं होता, उसी प्रकार दूषित भावनाओंवाला मनुष्य तीर्थमें अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्॥ करोड़ों बार स्नान करके भी पवित्र नहीं हो पाता।(४।८।३६) जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा फल प्राप्त होता है। किये गये शुभ-अशुभ कर्मका फल अवश्य ही प्रथमं मनसः शुद्धिः कर्तव्या शुभमिच्छता। भोगना पड़ता है। (६।९।६७) शुद्धे मनिस द्रव्यस्य शुद्धिर्भवति नान्यथा॥ कल्याणकी कामना करनेवाले पुरुषको सर्वप्रथम कामक्रोधौ तथा लोभो ह्यहङ्कारो मदस्तथा॥

शुद्धे मनिस द्रव्यस्य शुद्धिर्भवित नान्यथा।

कल्याणकी कामना करनेवाले पुरुषको सर्वप्रथम
अपने मनको शुद्ध कर लेना चाहिये। मनके शुद्ध हो
जानेपर द्रव्यशुद्धि स्वतः हो जाती है। इसके अतिरिक्त
अन्य कोई उपाय नहीं है। (४।८।३७)
कार्यमित्रं परिक्षिप्य धर्ममित्रं समाश्रयेत्।
अपना ही कार्य साधनेमें तत्पर रहनेवाले मित्रका
त्यागकर धर्ममार्गपर चलनेवाले मित्रका ही अवलम्बन
करना चाहिये। (५।२६।१५)
परोपतापनं कर्म न कर्तव्यं कदाचन।
न सुखं विन्दते प्राणी परपीडापरायणः॥

चाहिये, दूसरेको कष्ट देनेमें संलग्न प्राणी कभी सुख नहीं पाता। (६।३।२३)
विश्वासघातकर्तारो नरकं यान्ति निश्चयम्॥
निष्कृतिर्ब्रहाहन्तॄणां सुरापानां च निष्कृतिः॥
विश्वासघातिनां नैव मित्रद्रोहकृतामि।
विश्वासघात करनेवाले निश्चय ही नरकमें जाते हैं। ब्राह्मणकी हत्या करनेवालों और मद्यपान करनेवालोंके लिये तो प्रायश्चित्त है, परंतु विश्वासघातियों और मित्रद्रोहियोंके लिये कोई प्रायश्चित्त नहीं है। (६।६।३०—३२)

दूसरेको कष्ट पहुँचानेका कृत्य कभी नहीं करना

मातरं भ्रातरं हन्ति पितरं बान्धवं तथा।
गुरुं मित्रं तथा भार्यां पुत्रं च भिगनीं तथा।
लोभाविष्टो न किं कुर्यादकृत्यं पापमोहितः॥
लोभके वशीभूत प्राणी अपने सदाचार तथा कुलधर्मका
भी पिरत्याग कर देते हैं। वे अपने माता, पिता, भाई, बान्धव,
गुरु, मित्र, पत्नी, पुत्र तथा बहनतकका वध कर देते हैं। इस
प्रकार लोभके वशीभूत मनुष्य पापसे विमोहित होकर कौन–
सा दुष्कर्म नहीं कर डालता! (६।१६।४८-४९)
नैकत्र सुखसंयोगो दुःखयोगस्तु नैकतः।
घटिकायन्त्रवत्कामं भ्रमणं सुखदुःखयोः॥
न तो अकेले सुखका संयोग होता है और न तो
दुःखका; घटीयन्त्रकी भाँति सुख तथा दुःखका भ्रमण

सर्वविघ्नकरा ह्येते तपस्तीर्थव्रतेषु च।

सभी तपस्या, तीर्थसेवन और व्रतोंमें विघ्नकारी होते

लोभात्त्यजन्ति धर्मं वै कुलधर्मं तथैव हि।

हैं।(६।१२।२०-२१)

काम, क्रोध, लोभ, अहंकार तथा मद-ये

करनेवालोंके लिये तो प्रायश्चित्त है, परंतु विश्वासघातियों और मित्रद्रोहियोंके लिये कोई प्रायश्चित्त नहीं है। (६।६।३०—३२)

तिस्मन्प्राप्ते तु कर्तव्यं सर्वथैवात्मसाधनम्।।

क्षणभरमें नष्ट हो जानेवाला यह मानवशरीर प्राणियोंके लिये अत्यन्त दुर्लभ है। इसके प्राप्त होनेपर सम्यक्

पाप करनेका परामर्श देनेवाला, पाप करनेके लिये। प्रकारसे आत्मकल्याण कर लेना चाहिये। (६।३०।२५)

 श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण (पूर्वार्ध)—सिंहावलोकन » अङ्क] श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण (पूर्वार्ध)—सिंहावलोकन श्रवणका विशेष फल बताया गया है। जिस घरमें नित्य नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥ श्रीमदेवीभागवतपुराणका पूजन किया जाता है, वह घर तीर्थस्वरूप नरश्रेष्ठ भगवान् श्रीनर-नारायण और भगवती सरस्वती हो जाता है तथा उसमें निवास करनेवाले लोगोंके पापका नाश तथा व्यासदेवको नमन करके पुराणकी चर्चा करनी चाहिये। हो जाता है। पुराणोंमें श्रीमद्वीभागवतमहापुराणका अत्यन्त महिमामय इस श्रीमद्वीभागवत नामक परम पावन पुराणका प्राकट्य स्थान है। पुराणोंकी परिगणनामें वेदतुल्य, पवित्र और सभी भगवती श्रीजगदम्बिकाके श्रीमुखसे आधे श्लोकके रूपमें लक्षणोंसे युक्त यह पुराण पाँचवाँ है। शक्तिके उपासक इस हुआ। तत्पश्चात् शिष्य-परम्परासे उसीका विस्तार हुआ। इस पुराणको 'शाक्तभागवत' कहते हैं। इस ग्रन्थरत्नके आदि-पुराणमें अठारह हजार श्लोक हैं। श्रीकृष्णद्वैपायन वेदव्यासने मध्य और अन्तमें—सर्वत्र भगवती आद्याशक्तिकी महिमाका बारह स्कन्धोंमें इसकी रचना की है। पूरे पुराणमें कुल ३१८ अध्याय हैं। प्रतिपादन किया गया है। इस पुराणमें परब्रह्म परमात्माके मातुरूप और उसकी उपासनाका वर्णन है। भगवती आद्याशक्तिकी एक बार नैमिषारण्यमें शौनक आदि महर्षियोंने मुनिवर लीलाएँ अनन्त हैं, उन लीलाकथाओंका प्रतिपादन ही ग्रन्थका सूतजीसे स्वर्ग तथा मोक्षका सुख प्रदान करनेवाले और मुख्य प्रतिपाद्य विषय है, जिनके सम्यक् अवगाहनसे साधकों— भगवतीकी उत्तम महिमाका वर्णन करनेवाले इस पुराणको

करायी।

प्रतिपादन किया गया है। इस पुराणमें परब्रह्म परमात्माके मातृरूप और उसकी उपासनाका वर्णन है। भगवती आद्याशिक्तकी लीलाएँ अनन्त हैं, उन लीलाकथाओंका प्रतिपादन ही ग्रन्थका मुख्य प्रतिपाद्य विषय है, जिनके सम्यक् अवगाहनसे साधकों— भक्तोंका मन देवीके पदपद्मपरागका भ्रमर बनकर मुक्तिमार्गका पृथिक बन जाता है। श्रीवेदव्यासजीने राजा जनमेजयको यह पुराण स्वयं सुनाया था। पूर्वकालमें जनमेजयके पिता राजा परीक्षित् तक्षकनागद्वारा काट लिये गये। अतः पिताकी संशुद्धि (शुभगति)-के लिये राजाने तीनों लोकोंकी जननी भगवती देवीका

विधिवत् पूजन-अर्चन करके नौ दिनोंतक व्यासजीके

मुखारविन्दसे इस श्रीमद्देवीभागवतपुराणका श्रवण किया। इस

नवाहयज्ञके पूर्ण हो जानेपर राजा परीक्षित्ने उसी समय दिव्य

रूप धारण करके देवीका सालोक्य प्राप्त किया। राजा जनमेजय

अपने पिताकी दिव्य गित देखकर और महर्षि वेदव्यासकी

विधिवत् पूजा करके परम प्रसन्न हुए।

माहात्म्य—अठारह पुराणोंमें यह श्रीमद्देवीभागवतपुराण सर्वश्रेष्ठ है तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्षको प्रदान करनेवाला है। इस पावन पुराणकी महिमा कहाँतक कही जाय—जो फल कठिन तपस्याओं, व्रतों, तीर्थसेवन, अनेकविध दान, नियमों, यज्ञों, हवन एवं जप आदिके करनेसे नहीं प्राप्त होता है, वह फल मनुष्योंको श्रीमद्देवीभागवतके नवाहयज्ञसे प्राप्त हो जाता है।

यद्यपि इस पुराणके कथाश्रवणमें महीनों तथा दिनोंका

कोई नियम नहीं है, अतएव मनुष्योंद्वारा इसका सदा ही

पठन-श्रवण किया जाना चाहिये। वैसे आश्विन, चैत्र, माघ

तथा आषाढ्—इन महीनोंके चारों नवरात्रोंमें इस पुराणके

सुननेकी इच्छा प्रकट की। इसपर श्रीसूतजीने आद्याशिक्त महामाया जगज्जननी भगवती जगदम्बिकाका ध्यान करके इस पुराणकी पावन कथाका कहना प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम पाँच अध्यायोंमें श्रीमद्देवीभागवतके माहात्म्यका वर्णन करते हुए स्यमन्तकमणिकी कथा, राजा सुद्युम्नकी कथा तथा राजा दुर्दमको भगवती जगदम्बाकी कृपासे

मन्वन्तराधिप-पुत्रकी प्राप्तिकी कथा सुतजीने ऋषियोंको श्रवण

माहात्म्यवर्णनके अनन्तर ऋषियोंके आग्रह करनेपर

सूतजीने श्रीमदेवीभागवतपुराणकी श्रवणविधि, श्रवणकर्ताके लिये पालनीय नियम तथा कथाश्रवणके फल आदिका वर्णन किया।

इस श्रीमदेवीभागवतको सुननेके प्रायः सभी अधिकारी हैं। शक्ति-उपासकके अतिरिक्त गणेशभक्त, सूर्योपासक, शैव, वैष्णव, इसके साथ ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र—चारों वर्णोंके स्त्री-पुरुष एवं ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी—ये सभी सकाम

जो लोग ब्रह्मा-विष्णु और शिवमें भेददृष्टि रखते हैं, देवीकी भक्तिसे रहित हैं; पाखण्डी, हिंसक तथा दुष्ट हैं, विद्वानोंसे द्वेष रखनेवाले तथा नास्तिक हैं, परस्त्री, पराया धन, ब्राह्मणधन तथा देवसम्पत्तिके हरणमें लुब्ध रहते हैं—वे कथाश्रवणके अधिकारी नहीं हैं। श्रोताको चाहिये कि वह ब्रह्मचर्यका

पालन करे, पृथ्वीपर सोये, सत्य बोले, जितेन्द्रिय रहे तथा

भावसे अथवा निष्कामभावसे कथाश्रवण कर सकते हैं।

* सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-****************** कथाकी समाप्तितक संयमपूर्वक पत्तलपर भोजन करे। वह लिये मेरुपर्वतपर जानेका निश्चय किया। तदनन्तर उन्होंने देवभक्त, उदार, लोभरहित और हिंसा आदिसे रहित हो तथा मनमें विचार किया कि मैं किस देवताकी आराधना करूँ, जिससे मेरे अभीष्टकी सिद्धि हो? संयोगवश उसी समय काम, क्रोध, लोभ, मद, मात्सर्य, ईर्ष्या, राग-द्वेष, पाखण्ड और अहंकारको भी छोड़ दे। कथाव्रतीको सर्वदा विनयशील, नारदजी वहाँ आ गये। कुशल-प्रश्नके बाद नारदजीने व्यासजीसे सरलचित्त, पवित्र, दयालू, कम बोलनेवाला तथा उदार पूछा—हे द्वैपायन! आप किस कारणसे चिन्ताग्रस्त हैं ? मुझे मनवाला होना चाहिये। बतायें। कथावाचकके लिये संयमी, शास्त्रज्ञ, देवीकी आराधनामें व्यासजीने कहा—हे महर्षे! सन्तानहीनकी सद्गति नहीं तत्पर, दयालु, निर्लोभी, दक्ष, धैर्यशाली तथा वक्तृत्वसम्पन्न होती, अत: आप मुझे यह बतायें कि पुत्र-प्राप्तिके लिये मैं होना उत्तम माना गया है। व्यासके आसनपर बैठा हुआ किस देवताका आराधन करूँ ? इस प्रश्नके उत्तरमें नारदजीने पौराणिक ब्राह्मण जबतक कथा समाप्त न हो जाय, तबतक व्यासजीसे एक प्राचीन वृत्तान्त सुनाते हुए कहा कि एक बार किसीको भी प्रणाम न करे। मेरे पिता ब्रह्माजीने भगवान विष्णुको ध्यानमें स्थित होकर कठोर तप करते देखा, उन्हें तपस्या करते देखकर ब्रह्माजीको जिस प्रकार निदयोंमें गंगा, देवताओंमें शिव, काव्योंमें वाल्मीकीय रामायण, तेजस्वियोंमें भगवान् सूर्य, आनन्द देनेवालोंमें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने भगवान् विष्णुसे पूछा—हे देवाधिदेव! चन्द्रमा, सब धनोंमें सुयश, क्षमाशीलोंमें पृथ्वी, गम्भीरतामें हे जगन्नाथ! हे भूत-भविष्य-वर्तमानके स्वामी! आप किसलिये समुद्र, मन्त्रोंमें गायत्री तथा पापनाशके उपायोंमें भगवत्स्मरण यह कठोर तपस्या कर रहे हैं? हे जनार्दन! आप किसके श्रेष्ठ है; उसी प्रकार अठारहों पुराणोंमें यह श्रीमद्देवीभागवतपुराण ध्यानमें लीन हैं ? हे जगन्नाथ! मैं तो यही जानता हूँ कि आप सर्वश्रेष्ठ है। ही आदिस्वरूप, सबके कारण, निर्माता, पालनकर्ता, संहारक तथा सभी कार्योंको सम्पादित करनेवाले हैं ? भगवान शंकरसहित गायत्रीसे बढ़कर न कोई धर्म है, न तप है, न कोई देवता है और न कोई मन्त्र ही है। भगवती अपना गुणगान करनेवालेकी मैं और अन्य सभी देवता आपके आदेशसे अपने-अपने रक्षा करती हैं। इसी कारण इन्हें गायत्री कहा जाता है। वे दायित्वोंका निर्वहन करते हैं। मैं तो तीनों लोकोंमें आपसे भगवती गायत्री इस पुराणमें अपने रहस्योंसहित विराजती हैं। बढकर अन्य किसी देवताको नहीं जानता हुँ, फिर आप किस देवताका ध्यान कर रहे हैं? इस कारणसे इस महापुराणके सदृश दूसरा कोई उत्तम पुराण इस लोकमें नहीं है। ब्रह्माजीका वचन सुनकर भगवान् विष्णुने उनसे कहा— अमृतसागरके तटपर कल्पवृक्षकी वाटिकासे सुशोभित, हे ब्रह्मन्! किसी शक्तिके द्वारा ही आप सृष्टिके कर्ता हैं, मैं मणिद्वीपमें स्थित, बहुवर्णचित्रित चिन्तामणिमय भवनमें तथा भर्ता हूँ और शंकरजी हर्ता हैं। उस शक्तिके न रहनेपर आप परमशिवके हृदयमें विराजमान रहनेवाली और मन्द-मन्द न तो सृष्टि-रचना कर सकते हैं, न मैं पालन-कार्य कर मुसकानयुक्त मुखमण्डलवाली जगदम्बाका ध्यान करनेसे सकनेमें समर्थ हो सकता हूँ और न तो शंकरजी संहार कर मनुष्य सांसारिक सुखोंका उपभोग करता है और अन्तमें सकते हैं। उसी शक्तिका अवलम्बन प्राप्तकर मैं सदा तपश्चरण निश्चय ही मोक्ष प्राप्त करता है। करता रहता हूँ। हे विभो! हम सभी निरन्तर उसी शक्तिके अधीन रहते हैं। तिर्यग्योनिमें उत्पन्न होना किसीके लिये भी प्रथम स्कन्ध प्रिय नहीं होता। मैं अपनी इच्छासे वामन, वाराह आदि नारदजीका व्यासजीको देवीकी महिमा बताना-प्राचीन कालमें एक समय व्यासजीने गौरैया-दम्पतीको अपने योनियोंमें उत्पन्न नहीं होता हूँ, अपित इसमें उसी शक्तिकी प्रेरणा दो नवजात शिशुओंको स्नेह करते देखा। यह देखकर व्यासजीके ही परम कारण है। भला, मैं स्वतन्त्र होता तो मेरा सिर क्यों मनमें पुत्र-प्राप्तिकी इच्छा हो आयी, साथ ही उन्होंने यह भी कटता और घोडेका सिरवाला 'हयग्रीव-अवतार' में क्यों लेता ? अतएव मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ, अपितु सर्वथा उसी शक्तिके अधीन सोचा कि पुत्ररहित मनुष्यकी सद्गति नहीं होती, परंतु गृहस्थाश्रम चलानेके लिये पत्नी और धनकी आवश्यकता होती है, जो हूँ और निरन्तर उसी शक्तिका ध्यान करता रहता हूँ। इस प्रकार नारदजीने व्यासजीसे देवीकी सर्वोत्तमताका मेरे पास नहीं हैं। इस प्रकार चिन्तन करते हुए व्यासजीका मर्मा श्रिक्षान्त्र प्रकारकार्या प्रकारकार प्रकारकार स्थापन क्रिक्र स्थापन क्रिक्र स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्

(पूर्वार्ध)—सिंहावलोकन * १७
ही भवबन्धनसे मुक्त कर दे।
व्यासजीने शुकदेवजीको समझानेका बहुत प्रयास किया
और कहा कि जो मनसे बन्धनमुक्त है तथा जो न्यायमार्गसे
धनोपार्जन करता है, शास्त्रोक्त कर्मोंका विधिवत् सम्पादन
करता है, पितृश्राद्ध आदि यज्ञ करता है, सर्वदा सत्य बोलता
है तथा पवित्र रहता है; वह गृहमें रहते हुए भी मुक्त हो जाता
है, किंतु व्यासजीकी इन बातोंसे श्रीशुकदेवजी प्रभावित नहीं
हुए और उन्होंने कहा—हे पवित्रात्मन्! इस कर्मभूमिमें मनुष्यजन्म
अति दुर्लभ है। आप मुझे ऐसा ज्ञान दीजिये, जिससे मैं
गर्भवासजनित महान् भयसे मुक्त हो जाऊँ।
शुकदेवजीकी यह प्रवृत्ति देखकर व्यासजीने कहा—
हे पुत्र! मेरेद्वारा रचित श्रीमद्देवीभागवतपुराणको तुम पढ़ो,
जिसे सुननेमात्रसे सत् और असत् वस्तुओंका यथार्थ ज्ञान हो
जाता है। सर्वप्रथम आधे श्लोकमें इस पुराणका ज्ञान भगवती
पराशक्तिने भगवान् विष्णुको देते हुए कहा—'यह सारा जगत्
में ही हूँ, मेरे सिवा दूसरी कोई अविनाशी वस्तु है ही नहीं।'
भगवान् विष्णुसे यह ज्ञान ब्रह्माजीको मिला और ब्रह्माजीने इसे
नारदजीको बताया तथा नारदजीसे यह मुझे प्राप्त हुआ, फिर
मैंने इसकी बारह स्कन्धोंमें व्याख्या की। व्यासजीके कहनेपर
शुकदेवजीने श्रीमद्देवीभागवतपुराणका अध्ययन तो किया,
परंतु उन्हें शान्ति नहीं मिल सकी।
जनकजीका शुकदेवजीको ज्ञानोपदेश देना—
शुकदेवजीको चिन्तित देखकर व्यासजीने कहा कि पुत्र! यदि
मेरे उपदेशसे तुम्हें शान्ति नहीं मिलती तो राजा जनकके पास
मिथिलापुरी चले जाओ; वे राजर्षि जीवन्मुक्त, ब्रह्मज्ञानका
चिन्तन करनेवाले, शान्तचित्त एवं पवित्र आत्मा हैं। वे जलमें
कमलपत्रकी भाँति संसारमें रहते हैं, घरमें रहकर भी मुक्त हैं।
व्यासजीका वचन सुनकर शुकदेवजी मिथिलापुरी जानेके
लिये उत्सुक हो गये। पिताको प्रणामकर तथा उनकी प्रदक्षिणा
करके शुकदेवजी दो वर्षींमें मेरुपर्वत और एक वर्षमें हिमालयको
पार करके मिथिलापुरी पहुँच गये। वहाँकी ऐश्वर्यसम्पदाको
उन्होंने देखा। यद्यपि द्वारपालने पहले उन्हें रोका, परंतु उनकी
वार्तासे प्रभावित होकर उसने शुकदेवजीको एक अत्यन्त
रमणीय कक्षमें प्रवेश कराया। शुकदेवजीके आनेका समाचार
सुनकर महाराज जनकने उनका स्वागत-सत्कारकर आगमनका
प्रयोजन पूछा। शुकदेवजीने कहा—संशययुक्त चित्तवाला समझकर
मेरे पिताजीने मुझे आपके पास भेजा है। हे राजेन्द्र! मैं मोक्षका
अभिलाषी हूँ। तप, तीर्थ, व्रत, यज्ञ, स्वाध्याय और ज्ञान—

* सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-******************** इनमेंसे जो मोक्षका साक्षात् साधन हो, वह मुझे बताइये। कन्या पीवरीसे विवाह करके गृहस्थाश्रमके नियमोंका पालन जनकजी बोले—मोक्षमार्गावलम्बी व्यक्तिको यह उचित किया। उन्हें चार पुत्र और एक कन्या हुई, जिनका उन्होंने है कि वह अध्ययन समाप्त करनेके बाद विवाह करके विवाह आदि भी सम्पन्न किया। तदनन्तर कुछ समय बाद पत्नीके साथ गृहस्थाश्रममें रहते हुए न्यायोपार्जित धनसे शुकदेवजी सब कुछ त्यागकर कैलासके सुरम्य शिखरपर सर्वदा सन्तुष्ट रहकर किसीसे कोई आशा न रखे, पापोंसे बचते चले गये और नि:संग भावसे अविचल ध्यान लगाकर उन्होंने हुए सत्य वचन बोले और मन, वचन, कर्मसे सदा पवित्र रहे। मुक्तिपदको प्राप्त किया।* शुकदेवजीसे यह पूछनेपर कि चित्तमें वैराग्य और इधर पुत्रवियोगसे व्यासजी अत्यन्त दु:खी हुए।शोकसन्तप्त व्यासजीको अपनी माता सत्यवतीका ध्यान आया। वे अपने ज्ञान-विज्ञान उत्पन्न हो जानेपर व्यक्तिको गृहस्थाश्रममें रहना चाहिये अथवा वनोंमें, इसपर जनकजीने कहा—हे मानद! जन्मस्थानपर गये। वहाँ उन्हें माँ सत्यवतीका समाचार निषादराजसे इन्द्रियाँ बड़ी बलवान् होती हैं, वे वशमें नहीं रहतीं; वे मालूम हुआ। कालान्तरमें चित्रांगद और विचित्रवीर्यकी मृत्युके अपरिपक्व बुद्धिवाले मनुष्यके मनमें नाना प्रकारके विकार बाद कुरुवंशकी बेल समाप्त होनेको आ गयी तो सत्यवतीने उत्पन्न कर देती हैं। यदि मनुष्यके मनमें भोजनकी, शयनकी, व्यासजीका स्मरण किया और उनसे वंशरक्षाकी प्रार्थना की। सुखकी और पुत्रकी इच्छा बनी रहे तो वह संन्यासी होकर इसपर व्यासजीने नियोगविधिसे धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुरको भी इन विकारोंसे मुक्त नहीं हो सकता। वासनाओंका जाल उत्पन्न किया। बड़ा ही कठिन होता है, इसलिये उसकी शान्तिके लिये हयग्रीवावतारकी कथा—एक समयकी बात है, भगवान् मनुष्यको क्रमसे उसका त्याग करना चाहिये। विष्णु दस हजार वर्षींतक युद्ध करनेके कारण थक गये थे, गृहस्थाश्रममें रहते हुए भी जो शान्त, बुद्धिमान् तथा अतः वे एक शुभ स्थानपर पद्मासन लगाकर बैठ गये। उस आत्मज्ञानी होता है; वह न तो प्रसन्न होता है और न खेद समय उन्होंने पृथ्वीपर स्थित प्रत्यंचा चढ़े हुए धनुषपर अपना करता है; वह हानि-लाभमें समानभाव रखता है। जो पुरुष कण्ठप्रदेश टिका लिया था और संयोगवश उन्हें इसी अवस्थामें शास्त्रप्रतिपादित कर्म करता हुआ; सभी प्रकारकी चिन्ताओंसे गहरी निद्रा आ गयी। मुक्त रहता हुआ आत्मचिन्तनसे सन्तुष्ट रहता है, वह नि:सन्देह कालान्तरमें देवताओंने एक यज्ञ करनेका निश्चय किया मुक्त हो जाता है। और इसके लिये वे ब्रह्मा और शिवजीके साथ यज्ञाधिपति हे अनघ! देखिये, मैं राजकार्य करता हुआ भी जीवन्मुक्त विष्णुके पास गये। उन्हें निद्राके वशीभृत अचेत पड़ा देखकर हूँ। मैं अपनी इच्छानुसार सभी कार्य करता हूँ, किंतु मुझे शोक देवताओंको यह सोचकर बड़ी चिन्ता हुई कि निद्राभंग करना या हर्ष कुछ भी नहीं होता। जिस प्रकार मैं अनेक भोगोंको महान् दोष है और यज्ञ भी अवश्यकरणीय है। भोगता हुआ तथा अनेक कार्योंको करता हुआ भी अनासक्त इसपर सृष्टिकर्ता ब्रह्माजीने दीमकका सृजन किया और हूँ, उसी प्रकार आप भी मुक्त हो जाइये। उसे यज्ञमें आस-पास गिरे हव्यको प्राप्त करनेका अधिकार देकर भगवान् विष्णुके धनुषकी डोरीको काट देनेको कहा। हे द्विज! मन ही महान् सुख-दु:खका कारण है। इसीके निर्मल होनेपर सब कुछ निर्मल हो जाता है, विषयी ब्रह्माजीके इस प्रकार कहनेपर दीमकने धनुषकी डोरी काट मन बन्धन और निर्विषयी मन मुक्तिका प्रदाता है। यह देह दी। उस डोरीके कटते ही ब्रह्माण्डको विक्षुब्ध कर देनेवाली मेरी है—यही बन्धन है और यह देह मेरी नहीं है—यही मुक्ति भयंकर ध्वनि हुई और सर्वत्र अन्धकार छा गया। थोडी देर है। बन्धन शरीर और घरमें नहीं है, अपितु अहंता और बाद जब अन्धकार दूर हुआ तो देवताओंने देखा कि भगवान् ममतामें है। विष्णुका सिरविहीन धड़ पड़ा है और सिर गायब है। यह श्कदेवजीका गृहस्थाश्रममें प्रवेश—जनकजीके घटना देखकर देवगण स्तब्ध रह गये, वे करुणापूर्ण रुदन उपदेशसे शुकदेवजीकी सारी शंकाएँ समाप्त हो गयीं। वे करने लगे। सबको किंकर्तव्यविमृढ देखकर ब्रह्माजीने सभी पिताके आश्रममें लौट आये। फिर उन्होंने पितरोंकी सुन्दर देवताओंसे भगवती जगदम्बाकी स्तृति करनेको कहा। देवताओंका * श्रीमद्भागवतमें शुकदेवजीके जन्म आदिकी कथा अन्य प्रकारसे है। ये कथाएँ कल्पान्तरकी मानी जाती हैं। इसलिये कोई संशय नहीं करना चाहिये।

-1,	(पूर्वार्ध)—सिंहावलोकन * १९
<u> </u>	
कष्ट देखकर और उनकी स्तुति सुनकर आद्याशक्ति भगवती	लालसासे वे दोनों कहने लगे—हे सुव्रत! आप हमलोगोंके
जगदम्बा प्रकट हुईं और देवताओंको आश्वासन देते हुए वे	साथ युद्ध कीजिये, अन्यथा यह कमल-आसन छोड़ दीजिये;
बोलीं—एक बार भगवान् विष्णु लक्ष्मीको देखकर अकारण	क्योंकि कोई वीर ही इस शुभ आसनके योग्य है। उन
हँसने लगे थे। दुर्भाग्यसे उस समय लक्ष्मीमें तामसी भाव आ	दानवोंके इस कथनको सुनकर भयातुर हो ब्रह्माजी कमलनालमें
गया और उन्होंने यह सोचकर कि भगवान् विष्णु मेरे मुखको	प्रविष्ट होकर भगवान् विष्णुकी स्तुति करने लगे, परंतु
देखकर हँस रहे हैं, शाप दे दिया कि तुम्हारा सिर कट जायगा।	योगनिद्राके वशीभूत होनेके कारण भगवान् विष्णु जग नहीं
इसलिये इनका सिर कटकर लवणसागरमें गिर गया है, परंतु	सके। तब ब्रह्माजीने पराम्बा भगवती योगनिद्राकी स्तुति की।
इस घटनामें भी तुमलोगोंका हित ही निहित है; क्योंकि	उनकी स्तुतिसे प्रसन्न होकर वे तामसीदेवी भगवान् विष्णुके
प्राचीनकालमें हयग्रीव नामके एक दैत्यने मेरे मायाबीजमन्त्रका	शरीरसे निकलकर आकाशमें स्थित हो गयीं और भगवान्
जप करते हुए घोर तपस्या की थी। उसकी तपस्यासे प्रसन्न	विष्णु जम्हाई लेते हुए सचेत हो गये।
होकर मैं प्रकट हुई और उससे वरदान माँगनेको कहा। इसपर	अपने सामने भयसे काँपते ब्रह्माजीको देखकर भगवान्
उसने यह वरदान माँगा कि मेरे ही स्वरूपवालेसे मेरी मृत्यु	विष्णुने उनसे भयका कारण पूछा तो ब्रह्माजीने मधु-कैटभके
हो।	वृत्तान्तका वर्णन किया। इसपर भगवान् विष्णुने ब्रह्माजीको
अत: विष्णुके धड़में एक घोड़ेका सिर काटकर लगा	आश्वासन देते हुए दैत्योंको युद्धके लिये ललकारा। भगवान्
दो, ये ही हयग्रीवस्वरूपसे उस हयग्रीव नामक दैत्यका वध	विष्णुने पाँच हजार वर्षोंतक उन दैत्योंसे युद्ध किया, परंतु
करेंगे। देवीके ऐसा कहनेपर विश्वकर्माने अपनी तीक्ष्ण	उनका वध न कर सके तो उन्होंने आद्याशक्ति पराम्बा
तलवारसे एक घोड़ेका सिर काटकर भगवान् विष्णुके धड़पर	भगवतीका स्मरण किया; जिससे उन्हें यह ज्ञात हुआ कि
जोड़ दिया। इस प्रकार भगवान् विष्णुका हयग्रीव-अवतार	पराम्बा भगवतीने इन्हें इच्छामृत्युका वरदान दिया है। इसपर
हुआ और देवीकी कृपासे उन्होंने हयग्रीवदैत्यका वधकर	उन्होंने देवी भुवनेश्वरीकी स्तुति की और उन मदोन्मत्त
ु देवताओंको संकटमुक्त किया।	दैत्योंके वधमें निमित्त बननेको कहा। भगवान् विष्णुकी
देवीकी कृपासे विष्णुद्वारा मधु-कैटभका वध—	स्तुतिसे प्रसन्न होकर भगवती जगदम्बाने मधु-कैटभको
प्रलयावस्थामें जब तीनों लोक महाजलराशिमें विलीन हो गये	मोहित कर दिया। तब वे दोनों विष्णुभगवान्से कहने लगे कि
तब देवाधिदेव भगवान् विष्णु शेष-शय्यापर सो गये। उस	हे विष्णो! तुम हमलोगोंसे कोई वरदान माँग लो। इसपर
समय उनके कानोंकी मैलसे मधु-कैटभ नामक दो महाबली	भगवान् विष्णुने कहा कि यदि तुम दोनों मुझपर प्रसन्न हो तो
दानव उत्पन्न हुए। विशाल समुद्रमें रहते हुए वे दोनों सोचने	मेरे हाथों मारे जाओ। भगवतीकी मायासे मोहित उन दोनोंने
लगे कि हम कौन हैं ? हमारा जन्म क्यों हुआ ? इस जलराशिका	भगवान् विष्णुकी जंघापर अपने सिर रख दिये और विष्णुने
आधार क्या है ? इस प्रकार जब वे सोच रहे थे, उसी समय	सुदर्शनचक्रसे उनके मस्तक काट दिये। इस प्रकार भगवती
आकाशवाणीसे उन्हें वाग्बीजमन्त्र (ऐं) सुनायी दिया। उन	जगदम्बाकी कृपासे मधु-कैटभ नामक दैत्योंका वध हुआ।
दैत्योंने उस मन्त्रको हृदयंगम कर लिया और इन्द्रियोंका	इसके अनन्तर बुधके जन्मकी कथा, राजा सुद्धुम्नकी
संयमकर एक हजार वर्षांतक उसका जप करते रहे। उनकी	इला नामक स्त्रीके रूपमें परिणति, इलाका बुधसे विवाह तथा
इस घोर तपस्यासे प्रसन्न होकर आद्याशक्ति भगवतीने	पुरूरवाकी उत्पत्ति तथा राजा पुरूरवा एवं उर्वशीकी कथाका
आकाशवाणीके माध्यमसे कहा कि मैं प्रसन्न हूँ, तुम दोनों	वर्णन भी प्रथम स्कन्धमें प्राप्त होता है।
अपना मनोवांछित वर माँगो। तब उन दानवोंने कहा कि हे	दितीय स्कन्ध
देवि! हमारी मृत्यु हमारे इच्छानुसार हो। देवीने कहा—तुम	वेदव्यासजीका प्राकट्य—द्वितीय स्कन्धकी कथाका
दोनों अपनी इच्छासे ही मृत्युको प्राप्त होओगे, इसमें सन्देह	प्रारम्भ व्यासजीके जन्मसे होता है। अद्रिका नामकी एक
नहीं।	अप्सराने अपने चंचल स्वभावके कारण प्राणायाम करते हुए
वर प्राप्त करनेके बाद उन मदोन्मत्त दानवोंने सृष्टिकर्ता	एक ब्राह्मणके ध्यानमें विघ्न डाला, जिससे उस क्रोधित
ब्रह्माजीको कमलके आसनपर बैठे देखा। उन्हें देखकर युद्धकी	ब्राह्मणके शापसे यमुनाके जलमें उसे मछली होना पड़ा।

* सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-************************************ कालान्तरमें राजा उपरिचरके तेजसे मछलीके पेटसे एक मरा हुआ सर्प डाल दिया। जिसके कारण मुनिपुत्रने सात दिनोंमें तक्षकसर्पके द्वारा राजाको डँसनेका शाप दे दिया। बालक मत्स्य तथा एक बालिका मत्स्यगन्धाका जन्म हुआ। आगे चलकर एक घटनाक्रममें मत्स्यगन्धाके किशोरावस्था राजाके द्वारा अपनी सुरक्षाकी पूरी व्यवस्था की गयी, परंतु प्राप्त होनेपर पराशरमुनि उसपर आसक्त हो गये और उसीसे वे मृत्युसे बच नहीं सके। व्यासमुनिका जन्म हुआ। जो पुराणों और महाभारतके रचयिता राजा परीक्षित्की मृत्युके बाद उनके पुत्र जनमेजय राजा बने। उन धर्मात्मा राजाके राज्यमें प्रजा अत्यन्त सुखी थी। एक तथा वेदोंका विभाग करनेवाले हुए। व्यासजी भगवान् विष्णुके अंशावतार थे। जन्म लेते ही वे बड़े हो गये और तपस्या दिन उत्तंक नामक मुनि उनके पास आये। उत्तंकमुनिने जनमेजयको करनेके लिये चले गये। सर्प-सत्र करके सर्पोंका संहारकर अपने पिताका बदला पराशरमुनिके वरदानसे व्यासजीको जन्म देनेके बाद लेनेकी प्रेरणा की, परंतु राजा जनमेजयने कहा कि मुनिवर! मेरे पिताकी मृत्यु तो मुनिपुत्रके शापके कारण हुई थी, फिर भी मत्स्यगन्धा कन्या ही बनी रही और उसके शरीरसे दिव्य इसमें तक्षकसर्पका क्या दोष है ? इसपर उत्तंकने उन्हें बताया सुगन्ध निकलती थी। यही मत्स्यगन्धा सत्यवती नामसे विख्यात हुई और कुरुवंशी महाराज शन्तनुकी दूसरी पत्नी बनी। कि कश्यप नामका एक मन्त्रवेत्ता ब्राह्मण आपके पिताको जीवित करनेके लिये आ रहा था, परंतु तक्षकने उसे धन देकर राजा परीक्षित्का राज्याभिषेक—आगेकी कथामें राजा शन्तनु, गंगा और भीष्मके पूर्वजन्मकी कथा आती है। मार्गमें ही वापस कर दिया, अत: आपके पिताकी मृत्युमें गंगाजीद्वारा राजा शन्तनुका पतिरूपमें वरण, गंगाके आठवें तक्षक दोषी है। पुत्रके रूपमें राजा भीष्मका जन्म, भीष्मद्वारा आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत आस्तीकमुनिद्वारा सर्पसत्र रोकना—उत्तंकमुनिका धारण करनेकी प्रतिज्ञा और शन्तनुका सत्यवतीसे विवाह यह वचन सुनकर राजा जनमेजय बहुत दु:खी हुए और सम्पन्न होनेकी कथा है। तदनन्तर महर्षि दुर्वासाके द्वारा उन्होंने सर्पसत्र प्रारम्भ किया, जिसमें हवनकुण्डकी प्रज्वलित अग्निमें सहस्रों सर्प गिरकर मरने लगे। उस समय आस्तीक कुन्तीको अमोघ कामदमन्त्र प्राप्त होता है। मन्त्रके प्रभावसे कन्यावस्थामें ही कर्णके जन्म, कुन्तीका राजा पाण्डुसे विवाह, नामके मृनि वहाँ पधारे और उन्होंने राजा जनमेजयको मन्त्र-प्रयोगसे कुन्ती और माद्रीसे पाँचों पाण्डवोंके जन्मकी सर्पसत्र रोकनेकी प्रेरणा की। आस्तीकमुनिके समझानेपर कथा आती है। पाँचों पाण्डवोंका द्रुपदकन्या द्रौपदीसे विवाह राजाने सर्पसत्र बन्द कर दिया। इस प्रकार आस्तीकमुनिने तथा भगवान् श्रीकृष्णकी बहन सुभद्रासे अर्जुनका विवाह नागवंशकी रक्षा की। होता है, जिससे महान् वीर अभिमन्युका जन्म होता है और सर्पसत्र रोकनेके बाद अशान्तचित्त राजा जनमेजयको महाभारतके युद्धमें उसकी मृत्यु भी होती है। अभिमन्युके पुत्र श्रीवैशम्पायनजीने महाभारतकी कथा सुनायी, परंतु उन्हें शान्ति परीक्षितुका जन्म होता है। महाभारतके युद्धमें धृतराष्ट्रके सौ नहीं मिली। उन्होंने महामुनि वेदव्यासजीसे कहा—हे भगवन्! पुत्रोंकी मृत्यु हो जाती है। अतः धृतराष्ट्र युधिष्ठिरके संरक्षणमें मेरे मनको शान्ति नहीं मिल रही है, आप कोई ऐसा उपाय करें, जिससे दुर्गतिको प्राप्त मेरे पिता शीघ्र स्वर्ग चले जायँ। रहते हैं। धृतराष्ट्र युधिष्ठिरसे प्राप्त धनके द्वारा अपने सौ पुत्रोंका और्ध्वदैहिक कर्म तथा पिण्डदान आदि कृत्य करके इसपर व्यासजीने कहा-हे राजन्! आप देवीयज्ञ करके गान्धारीको साथ लेकर वनके लिये प्रस्थान करते हैं। साथमें श्रीमदेवीभागवतमहापुराणका श्रवण कीजिये। इस पुराणके कुन्ती तथा महामति विदुर भी उनका अनुसरण करते हैं। श्रवणसे आपके चित्तको परम शान्तिकी प्राप्ति होगी और कालान्तरमें विदुर, धृतराष्ट्र, गान्धारी और कुन्तीका वनमें आपके पितरोंको अक्षय स्वर्ग प्राप्त होगा। इस प्रकार द्वितीय स्कन्धको कथा पूर्ण होती है। प्राणान्त हो जाता है। पाँचों पाण्डव अपने पौत्र परीक्षित्को राजा बनाकर द्रौपदीसहित हिमालयकी ओर प्रस्थान करते हैं तृतीय स्कन्ध त्रिदेवोंको भगवतीकी महामाया और मणिलोकका और वहीं उनका स्वर्गारोहण हो जाता है। राजा परीक्षित्ने साठ वर्षोंतक धर्मपूर्वक समस्त पृथ्वीका दर्शन — तृतीय स्कन्धका प्रारम्भ महाराज जनमेजयके ब्रह्माण्डकी पालन किया। एक दिन वे आखेटके लिये वनमें गये और उत्पत्ति और उत्पत्तिकर्ता-सम्बन्धी प्रश्नसे होता है। राजा Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sha कालक प्रभावसे प्रभावित होकर एक ऋषिक गलमें उन्होंने जनमज्यन यह भी जीनना चाही कि भगवर्ती अम्बा कीन है,

अङ्क] * श्रीमदेवीभागवतमहापुराण	(पूर्वार्ध)—सिंहावलोकन * २१
उनके यज्ञका क्या विधान है ? सर्वश्रेष्ठ देवता कौन है—इन	अपने नवार्ण-मन्त्रका दान दीजिये, जिसका निरन्तर जपकर
प्रश्नोंके उत्तरमें व्यासजीने पूर्वकालमें नारदसे हुए एक संवादको	मैं सदाके लिये सुखी हो जाऊँ। भगवतीने प्रसन्न होकर
सुनाया, जो नारदजीको ब्रह्माजीने इस प्रकार बताया था—	नवार्ण-मन्त्रका उच्चारण किया, जिसे शिवजीने ग्रहणकर
मधु-कैटभसे युद्ध करते हुए जब भगवान् विष्णुको	भगवतीके चरणोंमें प्रणाम किया। तदनन्तर मैंने (ब्रह्माजीने)
पाँच हजार वर्ष बीत गये और वे दानव न मारे जा सके तो	पूछा—हे देवि! आप और परब्रह्ममें क्या भेद है? इसपर
भगवान् विष्णुने भगवती महामायाका स्मरण किया। भगवतीने	भगवती जगदम्बिकाने कहा—मैं और परब्रह्म सदा एक ही
विष्णुकी दयनीय स्थिति देखकर उन दानवोंको अपने दृष्टिपातसे	हैं। हममें कोई भेद नहीं है; क्योंकि जो वे हैं, वही मैं हूँ और
मोहित कर दिया और तब विष्णुने उनका वध कर दिया। उस	जो मैं हूँ, वही वे हैं। बुद्धिभ्रमसे ही हम दोनोंमें भेद दिखायी
समय भगवान् शंकर भी वहाँ आ गये और हम तीनोंने उन	पड़ता है। अब आपलोग जाइये और अपने-अपने लोकोंकी
`	
आद्याशक्ति महामाया भगवतीकी भक्तिपूर्वक स्तुति की। इसपर	रचनाकर उसमें निवास कीजिये।
प्रसन्न होकर भगवतीने हम सबसे कहा—हे ब्रह्मा-विष्णु-	यह कहकर भगवतीने अपनी महासरस्वती नामक शक्तिको
महेश! अब आपलोग सृष्टि, पालन एवं संहारके अपने-	मुझे अपनी सहचरी बनानेके लिये प्रदान किया। इसी प्रकार
अपने कार्य प्रमादरहित होकर कीजिये। उसी समय एक	उन्होंने अपनी महालक्ष्मी नामक शक्ति विष्णुको और महाकाली
रमणीक विमान वहाँ आ उपस्थित हुआ, जिसपर भगवतीकी	नामक शक्ति भगवान् शंकरको प्रदान की। भगवतीने हमसे
आज्ञासे हम तीनों आरूढ़ हो गये। मनकी गतिसे उड़ता हुआ	कहा—जो विष्णु हैं, वे ही साक्षात् शिव हैं और जो शिव हैं,
वह विमान स्वर्गलोकसदृश एक लोकमें पहुँचा, जहाँका राजा	वे ही विष्णु हैं। उन दोनोंमें भेद करनेवाला नरकगामी होता
इन्द्रके जैसा था। उसके बाद वह विमान ब्रह्मलोक पहुँच	है। तत्पश्चात् हम तीनों भगवतीसे विदा होकर विमानपर
गया। वहाँ ब्रह्माजी तथा मूर्तरूप वेद-वेदांगों, समुद्रों और	आये और पुन: पुरुषरूपमें हो गये। उस विमानसे हम पुन:
निदयों आदिको देखकर हम तीनों आश्चर्यचिकत हो गये।	वहीं पहुँच गये, जहाँ विष्णुने मधु-कैटभका वध किया था।
इसके बाद वह विमान क्रमशः कैलास और वैकुण्ठधाम गया	त्रिगुणमयी सृष्टिका निरूपण—जनमेजयको यह
और वहाँ हमलोगोंने शिव और विष्णुको भी अपने-अपने	प्रसंग सुनाकर व्यासजीने उन्हें नारदजीद्वारा बताया गया वह
गणों और परिकरोंके साथ देखा। तदनन्तर वह विमान भगवतीके	प्रसंग सुनाया, जो नारदजीसे ब्रह्माजीने कहा था। नारदजीने
दिव्य धाम मणिद्वीपमें पहुँचा। वहाँ विमानसे उतरकर हमलोग	ब्रह्माजीसे कहा—हे पितामह! निर्गुणा शक्ति और निर्गुण
भगवतीके दिव्य मन्दिरकी ओर गये, पर जैसे ही द्वारपर पहुँचे	परमात्मा कैसे हैं ? ब्रह्माजीने कहा—हे नारद! जो शक्ति हैं,
वैसे ही हम तीनों स्त्रीरूपमें परिणत हो गये। उस स्त्रीवेषमें	वे ही परमात्मा हैं और जो परमात्मा हैं, वे ही परम शक्ति मानी
हम तीनोंने भगवतीके चरणकमलोंके दर्शन किये। हमारे	गयी हैं। इन दोनोंमें विद्यमान सूक्ष्म अन्तरको कोई नहीं जान
प्रणाम करनेपर भगवतीने अपनी कृपादृष्टि हमपर डाली;	सकता। सगुण मनुष्य निर्गुण परमात्माका दर्शन नहीं कर
उसी समय हमने उनके चरणकमलोंके नखरूपी दर्पणमें	सकता। स्थूल और सूक्ष्मभेदसे परमात्माके दो रूप होते हैं,
समस्त स्थावरजंगमात्मक ब्रह्माण्डके साथ-साथ स्वयंको भी	उनमें ज्ञानरूप निराकारस्वरूप सबका कारण कहा गया है।
देखा। सूर्य, चन्द्रमा, इन्द्र, वरुण, कुबेर, वायु, अग्नि, पर्वत,	परमात्माका स्थूल विराट् स्वरूप—ब्रह्माण्ड पंच महाभूतोंकी
समुद्र आदि भी उसमें दिखायी दे रहे थे। यह सब देखकर	पंचीकरण-क्रियासे बना है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और
ु हम सब आश्चर्यचिकत हो गये।	आकाश—ये पंचमहाभूत हैं तथा गन्ध, रस, रूप, स्पर्श और
भगवान् विष्णुने उन भगवती भुवनेश्वरीकी स्तुति करते	शब्द—ये इनकी पंचतन्मात्राएँ हैं। गुण तीन हैं—सत्त्वगुण,
हुए कहा—हे भवानि! आपके द्वारा रचित इस ब्रह्माण्डप्रपंचमें	रजोगुण और तमोगुण। सत्त्वगुणका वर्ण श्वेत है, यह सर्वदा
न जाने कितने ब्रह्माण्ड भरे पड़े हैं, हे देवि! मैं आपके	धर्मके प्रति प्रीति उत्पन्न करता है। सरलता, सत्य, शौच,
चरणोंमें बार-बार नमन करता हूँ। भगवान् शंकरने उन	श्रद्धा, क्षमा, धैर्य, कृपा, लज्जा, शान्ति और सन्तोष—ये
जगदम्बाकी स्तुति करते हुए कहा—हे शिवे! आपकी इस	सत्त्वगुणीके लक्षण हैं। रजोगुण रक्तवर्णवाला कहा गया है।
लीलाको हम नहीं जान सकते। हे देवि! मुझपर दयाकर	रजोगुणीमें ईर्ष्या, द्रोह, मत्सर, स्तम्भन, उत्कण्ठा, निद्रा,
रमरमानम एम महा जाम रामगा। ६ पात्रः मुश्रामर प्यापार	7-113 11.11 411, XIG, 11/11/2, 7/11-11.12, 0/4/-01, 1/1XI,

२२ * सदा सेव्यं सदा से	त्र्यं देवीभागवतं नरैः * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-
\$	**********************************
अभिमान, मद एवं गर्व होते हैं। तमोगुणका वर्ण कृष्ण होता	नाना प्रकारके कष्ट सहन करने पड़े। अभिमानपूर्वक क्षत्रियों
है। यह मोह और विषाद उत्पन्न करता है। आलस्य, अज्ञान,	और वैश्योंद्वारा किये जानेवाले पशुबलिसम्बन्धी यज्ञ राजस
निद्रा, दीनता, भय, विवाद, कायरता, कुटिलता, क्रोध, विषमता,	यज्ञ कहे जाते हैं। क्रोध, ईर्ष्या और क्रूरतापूर्वक राक्षसोंद्वारा
नास्तिकता और परदोषदर्शन—ये तमोगुणीके लक्षण हैं। किसी	किये जानेवाले यज्ञ तामस यज्ञ कहे जाते हैं।
भी प्राणीमें सत्त्वगुण, रजोगुण तथा तमोगुण अकेले नहीं रहते,	मोक्षकी कामनावाले विरक्त मुनियोंके लिये मानस यज्ञ
अपितु मिश्रित धर्मवाले वे तीनों गुण एक-दूसरेके आश्रयीभूत	कहा गया है। इस यज्ञमें मनका शुद्ध और गुणरहित होना
होकर रहते हैं। केवल सत्त्वगुण कहीं भी परिलक्षित नहीं	आवश्यक है। यह यज्ञ मोक्षप्रदाता है। स्वर्ग-प्राप्तिकी इच्छावालेके
होता है। गुणोंके परस्पर मिश्रीभाव होनेसे सत्त्वगुण भी मिश्रित	लिये अग्निष्टोम यज्ञ बताया गया है। हे राजन्! आप देवीके
दिखायी देता है। यदि ये तीनों गुण परस्पर मिश्रित न होते	बीजमन्त्रके जानकार विद्वान् ब्राह्मणोंद्वारा देवीयज्ञ कराइये,
तो उनके स्वभावमें एक-सी ही प्रवृत्ति रहती, किंतु तीनों	इसे पूर्वकालमें भगवान् विष्णुने किया था। इसीसे आपके
गुणोंमें मिश्रण होनेके कारण ही विभिन्नताएँ दिखायी पड़ती	पिताका उद्धार होगा।
हैं। उदाहरणके लिये राजकीय सेना रजोगुणयुक्त होती है,	राजा जनमेजयने कहा—हे व्यासजी! आप मुझे भगवान्
परंतु दुष्टोंसे रक्षा करनेके कारण सज्जनोंको वह सत्त्वगुणसम्पन्न	विष्णुद्वारा किये गये देवीयज्ञके विषयमें बतायें। इसपर व्यासजीने
और दुर्जनोंको तमोगुणी दिखायी देती है।	बताया कि मणिद्वीपसे विमानद्वारा क्षीरसागरमें आनेपर त्रिदेवोंने
देवीके सारस्वत बीजमन्त्रकी महिमा—इस प्रकार	पृथ्वीको उत्पन्न किया, परंतु उस समयतक पृथ्वी चलायमान
यह सम्पूर्ण सृष्टि त्रिगुणमयी है। भगवती परमेश्वरी ही	थी, तब देवीने अपनी आधारशक्तिसे पृथ्वीको अचल किया।
कार्यभेदसे सगुणा और निर्गुणा दोनों हैं। वे ही इस सत् और	तदनन्तर उसपर सुमेरु आदि पर्वतोंकी रचना हुई। वैकुण्ठ, कैलास
असद्रूप जगत्की रचना करती हैं। समस्त देवता उनकी	और स्वर्ग आदि लोकोंका निर्माण हुआ। ब्रह्माजीने मरीचि
शक्तिसे युक्त होकर अपने–अपने कार्य–सम्पादनमें समर्थ होते	आदि मानसिक पुत्रोंकी सृष्टि की। मरीचिके पुत्र कश्यप हुए।
हैं। ये भगवती नामोच्चारणमात्रसे मनोवांछित फल देनेवाली	कश्यपने दक्षप्रजापतिकी तेरह कन्याओंसे विवाह किया और उनसे
हैं।'ऐं' इनका बीजमन्त्र है। सत्यव्रत नामक एक निरक्षर तथा	ही सारी काश्यपी सृष्टि फैली, जिससे यह संसार भर गया।
महामूर्ख ब्राह्मणने इस मन्त्रका बिन्दुरहित अशुद्ध उच्चारण	एक समय भगवान् विष्णुको मणिद्वीपका स्मरण हो
करके भी सिद्धि प्राप्त कर ली थी। उस ब्राह्मण सत्यव्रतने	आया, तो उन्होंने अम्बायज्ञ करनेका निर्णय लिया। उन्होंने
किरातके बाणसे घायल एक सूअरको देखकर दयावश 'ऐ-	शिल्पियोंसे विशाल मण्डप बनवाया। ब्राह्मणगण बीजसहित
ऐ' कहा। उस बिन्दुरहित सारस्वत बीजमन्त्रके प्रभावसे	देवीमन्त्रोंका जप करने लगे, प्रज्वलित अग्निमें आहुतियाँ दी
उसके हृदयमें समस्त विद्याएँ प्रस्फुटित हो गयीं।	जाने लगीं। उसी समय आकाशवाणी हुई—हे विष्णो! आप
व्यासजीने जनमेजयको भगवतीका यह अत्युत्तम माहात्म्य	देवताओंमें श्रेष्ठतम होंगे, जब-जब पृथ्वीतलपर धर्मका ह्रास
सुनाते हुए कहा कि परम भक्तिपूर्वक सदैव भगवतीकी	होगा, तब आप अपने अंशसे अवतार लेकर धर्मकी रक्षा करेंगे।
अर्चना करनी चाहिये।	व्यासजीने देवीयज्ञके विषयमें बताकर राजा जनमेजयसे
देवीयज्ञकी महिमा —राजा जनमेजयने कहा—हे	देवीमाहात्म्य-सम्बन्धी आख्यान इस प्रकार सुनाया—
स्वामिन्! मैं देवीयज्ञ करूँगा, आप उस यज्ञकी विधि, मन्त्र,	सुबाहु तथा सुदर्शनपर जगदम्बाकी कृपा— अयोध्यामें
होमद्रव्य, ब्राह्मणसंख्या और दक्षिणा आदिके विषयमें सम्यक्	भगवान् रामसे १५वीं पीढ़ी बाद ध्रुवसन्धि नामके राजा हुए।
रूपसे बताइये।	उनके दो स्त्रियाँ थीं। पट्टमहिषी थी कलिंगराज वीरसेनकी
व्यासजी बोले—हे राजन्! सात्त्विक, राजस और	पुत्री मनोरमा और छोटी रानी थी उज्जयिनीनरेश युधाजित्की
तामसभेदसे यज्ञ तीन प्रकारके होते हैं। जिस यज्ञमें देश,	पुत्री लीलावती। मनोरमाके पुत्र हुए सुदर्शन और लीलावतीके
काल, द्रव्य, मन्त्र, ब्राह्मण तथा श्रद्धा सात्त्विक हों; वह	शत्रुजित्। महाराजकी दोनोंपर ही समान दृष्टि थी। दोनों
सात्त्विक यज्ञ है। पाण्डवोंके यज्ञमें द्रव्य अन्यायोपार्जित था,	राजपुत्रोंका समान रूपसे लालन-पालन होने लगा।
इसलिये राजसूययज्ञकी पूर्णताके बाद भी पाण्डवों तथा द्रौपदीको	इधर महाराजको आखेटका व्यसन कुछ अधिक था।

अङ्क] * श्रीमदेवीभागवतमहापुरा	ण (पूर्वार्ध)—सिंहावलोकन * २३
एक दिन वे शिकारमें एक सिंहके साथ भिड़ गये, जिसम	ं राजाओंके साथ वह भी काशी आ गया।
सिंहके साथ स्वयं भी स्वर्गगामी हो गये। मन्त्रियोंने उनक	ो इधर शत्रुजित्को साथ लेकर उसके नाना अवन्तिनरेश
पारलौकिक क्रिया करके सुदर्शनको राजा बनाना चाहा। इध	र युधाजित् भी आ धमके थे। शशिकलाद्वारा सुदर्शनके मन-
शत्रुजित्के नाना युधाजित्को इस बातकी खबर लगी तो व	वे ही-मन वरण किये जानेकी बात सर्वत्र फैल गयी थी। इसे
एक बड़ी सेना लेकर इसका विरोध करनेके लिये अयोध्या	i भला, युधाजित् कैसे सहन कर सकते थे। उन्होंने सुबाहुको
आ डटे। इधर कलिंगनरेश वीरसेन भी सुदर्शनके पक्षमें अ	। बुलाकर धमकाया। सुबाहुने इसमें अपनेको दोषरहित बतलाया।
गये। दोनोंमें युद्ध छिड़ गया, कलिंगाधिपति वीरसेन मारे गये	। तथापि युधाजित्ने कहा—'मैं सुबाहुसहित सुदर्शनको मारकर
अब रानी मनोरमा डर गयी। वह सुदर्शनको लेकर एक धार	 कन्याका बलात् अपहरण करूँगा।' राजाओंको बालक सुदर्शनपर
तथा महामन्त्री विदल्लके साथ भागकर महर्षि भारद्वाजवे	जुछ दया आ गयी। उन्होंने सुदर्शनको बुलाकर सारी स्थिति
आश्रममें प्रयाग पहुँच गयी। युधाजित्ने अयोध्याके सिंहासनप	र समझायी और भाग जानेकी सलाह दी।
शत्रुजित्को अभिषिक्त किया और सुदर्शनको मारनेके लिरं	में सुदर्शनने कहा—'यद्यपि न मेरा कोई सहायक है और
वे भारद्वाजके आश्रमपर पहुँचे; पर मुनिके भयसे वहाँसे उन्हे	ं न मेरे पास कोई सेना ही है, तथापि मैं भगवतीके स्वप्नगत
भागना पड़ा।	आदेशानुसार ही यहाँ स्वयंवर देखने आया हूँ। मुझे पूर्ण
एक दिन भारद्वाजके शिष्यगण महामन्त्रीके सम्बन्धां	ं विश्वास है, वे मेरी रक्षा करेंगी। मेरी न तो किसीसे शत्रुता
कुछ बातें कर रहे थे। कुछने कहा कि विदल्ल क्लीव	व है और न मैं किसीका अकल्याण ही चाहता हूँ।'
(नपुंसक) है। दूसरोंने भी कहा—'यह सर्वथा क्लीब है।	' प्रात:काल स्वयंवर-प्रांगणमें राजालोग सज-धजकर
सुदर्शन अभी बालक ही था। उसने बार-बार जो उनके मुँहरं	भे आ बैठे तो सुबाहुने शशिकलासे स्वयंवरमें जानेके लिये कहा,
क्लीब-क्लीब सुना तो स्वयं भी 'क्ली-क्ली' करने लगा	। पर उसने राजाओंके सामने होना सर्वथा अस्वीकार कर दिया।
पूर्वपुण्यके कारण वह कालीबीजके रूपमें अभ्यासमें परिण	 सुबाहुने राजाओंके अपमान तथा उनके द्वारा उपस्थित होनेवाले
हो गया। अब वह सोते, जागते, खाते, पीते, 'क्ली-क्ली' रट	ो भयको बात कही। शशिकला बोली—'यदि तुम सर्वथा
लगा। इधर महर्षिने उसके क्षत्रियोचित संस्कारादि भी क	3 3
दिये और थोड़े ही दिनोंमें वह भगवती तथा ऋषिकी कृपार	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
शस्त्र-शास्त्रादि सभी विद्याओंमें अत्यन्त निपुण हो गया। एव	
दिन वनमें खेलनेके समय उसे देवीकी दयासे अक्षय तूणी	
तथा दिव्य धनुष भी पड़ा मिल गया। अब सुदर्शन भगवतीर्क	
कृपासे पूर्ण शक्तिसम्पन्न हो गया।	और सबेरा होते ही उन्हें पहुँचाने लगे।
इधर काशीमें उस समय राजा सुबाहु राज्य करते थे	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
उनकी कन्या शशिकला बड़ी विदुषी तथा देवीभक्ता थी	_
भगवतीने उसे स्वप्नमें आज्ञा दी कि 'तू सुदर्शनका अप	
पतिरूपमें वरण कर ले। वह तेरी समस्त कामनाओंको पूप	
करेगा।' शशिकलाने मनमें उसी समय सुदर्शनको पतिवे	- ,
रूपमें स्वीकार कर लिया। प्रात:काल उसने अपना निश्चय	
माता-पिताको सुनाया। पिताने लड़कीको जोरोंसे डाँटा औ	
एक असहाय वनवासीके साथ सम्बन्ध जोड़नेमें अपन	
अपमान समझा। उन्होंने अपनी कन्याके स्वयंवरकी तैयार्	_
आरम्भ की। उन्होंने उस स्वयंवरमें सुदर्शनको आमन्त्रित भ	•
नहीं किया; परंतु शशिकला भी अपने मार्गपर दृढ़ थी। उसने	,
सुदर्शनको एक ब्राह्मणद्वारा देवीका सन्देश भेज दिया। सर्भ	ो लोगोंकी रक्षाके लिये मैं निरन्तर इस मुक्तिपुरी काशीमें निवास

 सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-******************************** कारागारमें जन्म क्यों ग्रहण किया, वस्देव-देवकी भी देवताओंके करूँगी। पूज्य थे, पाण्डव भी देवताओंके अंशसे उत्पन्न थे और उनमें इस प्रकार कहकर भगवती अन्तर्धान हो गयीं। तदनन्तर सुदर्शनने अयोध्या तथा राजा सुबाहुने काशीमें भगवती दुर्गाकी भी अर्जुन तो नरके अवतार थे, द्रौपदी लक्ष्मीके अंशसे उत्पन्न स्थापना की।* काशीके सभी लोग भगवान् विश्वनाथके थीं, फिर इन सबको यहाँ पृथ्वीपर अनेक प्रकारके कष्ट क्यों समान भगवती दुर्गाकी भी पूजा-उपासना करने लगे। सहन करने पड़े? जिन मुनिप्रवर नर-नारायणने मुक्तिहेत् कठोर तपस्या की थी, उन महातपस्वी तथा योगसिद्धसम्पन्न नवरात्रवत तथा कुमारीपूजन—इसके बाद महाराज जनमेजयने नवरात्रव्रतका विधान पूछा। व्यासजीने बताया कि दोनों मुनियोंने कृष्ण तथा अर्जुनके रूपमें मानवशरीर क्यों आत्मकल्याणके इच्छुक मनुष्योंके लिये यह व्रत अवश्यकरणीय प्राप्त किया ? इसके अतिरिक्त और भी कई प्रकारकी शंकाएँ जनमेजयजीने प्रस्तुत कीं। है। इस व्रतमें कुमारी-पूजनका बहुत महत्त्व है। दो वर्षसे दस वर्षतककी कन्याओंका इस व्रतमें पूजन करना चाहिये। कन्याएँ इन प्रश्नोंके उत्तरमें व्यासजीने कहा—हे राजन्! इस रोगरहित और सौन्दर्यमयी होनी चाहिये। जो कन्या किसी विषयमें क्या कहा जाय, कर्मोंकी बडी गहन गति होती है। अंगसे हीन हो, कोढ़ या घावयुक्त हो, अन्धी, कानी, कुरूप, कर्मकी गति जाननेमें देवता भी समर्थ नहीं हैं, मानवोंकी क्या बहुत रोमवाली या रजस्वला हो—उस कन्याका पूजन नहीं बात है! आदि तथा अन्तसे रहित होते हुए भी समस्त जीव करना चाहिये। इस व्रतका माहात्म्य बताते हुए व्यासजीने कर्मरूपी बीजसे नानाविध योनियोंमें बार-बार जन्म लेते हैं कहा कि कोसलदेशमें सुशील नामक एक अत्यन्त निर्धन और मरते हैं। शुभ, अशुभ तथा मिश्र कर्मोंसे यह जगत् सदा व्याप्त रहता है। संचित, प्रारब्ध तथा वर्तमान—ये तीन प्रकारके वैश्य था। घरमें अन्न न होनेके कारण उसने अपने पुत्रको घरसे निकाल दिया था। वह अपनी पुत्रीका विवाह करनेमें कर्म बताये गये हैं। सुख-दु:ख, वृद्धावस्था, मृत्यु, हर्ष, शोक, भी असमर्थ था। किसी ब्राह्मणश्रेष्ठने उसकी दशापर दयाई काम-क्रोध तथा लोभ आदि ये सभी देहगत गुण हैं, जो दैवके होकर उसे नवरात्रव्रत करनेका उपदेश दिया। उस वैश्यने अधीन होकर सभी जीवोंको प्राप्त होते हैं। समस्त जीवोंकी नवरात्रका व्रत किया, जिससे प्रसन्न होकर महाष्टमीकी उत्पत्ति कर्मके बिना हो ही नहीं सकती। अतएव कर्मबीजकी अर्धरात्रिको भगवतीने उसे दर्शन देकर कृतार्थ कर दिया। अनिवार्यतापर बुद्धिमान् पुरुषोंको सदा चिन्तन करना चाहिये। स्वयं भगवान् श्रीरामने नारदजीके परामर्शसे रावणपर सभी देहधारी जीव चाहे मनुष्य, पशु या देवता हों-अपने विजय प्राप्त करनेके लिये इस नवरात्रव्रतका अनुष्ठान किया कियेका शुभाशुभ फल पाते हैं। था। अष्टमीकी मध्यरात्रिको भगवतीने साक्षात् दर्शन दिया देवकी और रोहिणी नामक वसुदेवजीकी पत्नियाँ पूर्वजन्ममें अदिति और सुरसा थीं, वरुणके शापसे उन्हें मानवयोनिमें और कहा कि हे नरोत्तम! देवताओं के अंशसे उत्पन्न ये वानर मेरी शक्तिसे सम्पन्न होकर आपके सहायक होंगे। आपके जन्म लेना पडा। इसी प्रकार वसुदेवजी पूर्वजन्ममें महर्षि अनुज लक्ष्मण मेघनादका वध करेंगे और आप स्वयं पापी कश्यप थे, वरुणदेवकी गायोंका हरण कर लेनेके कारण उन्हें रावणका संहार करेंगे। इसके अनन्तर ग्यारह हजार वर्षींतक मानवयोनिमें गोपालकके रूपमें जन्म लेना पड़ा। अदितिने आप भूतलका राज्यकर अपने लोकको प्रस्थान करेंगे। भगवतीका इन्द्रके द्वारा दितिके गर्भस्थ शिशुको नष्ट करा दिया था, वरदान प्राप्तकर भगवान् रामने विजय प्राप्त की। इस प्रकार इसलिये दितिने क्रुद्ध होकर उसे मृतवत्सा होनेका शाप दे देवीके उत्तम माहात्म्यका वर्णन करनेवाला तीसरा स्कन्ध पूर्ण दिया था। यही अदिति देवकी हुई और उसके छहों पुत्र जन्म लेते ही मार दिये गये। हुआ। चतुर्थ स्कन्ध व्यासजीने कहा-हे राजन्! ब्रह्मासे लेकर तृणपर्यन्त स्थावर-जंगम सभी प्राणी मायाके वशीभृत रहते हैं और वह कर्म-गतिका निरूपण — चतुर्थ स्कन्धका प्रारम्भ राजा जनमेजयके प्रश्नोंसे होता है। जनमेजयने व्यासजीके समक्ष माया उनके साथ क्रीडा करती है। यह माया सभीको मोहमें अपनी बहुत सारी शंकाएँ प्रस्तुत कीं। श्रीकृष्ण स्वयं परब्रह्म डाल देती है और जगतुमें निरन्तर विकार उत्पन्न करती है। परमात्मा थे तो फिर साक्षात विष्णुने वसुदेवके पुत्ररूपमें चूँकि यह संसार अहंकारसे उत्पन्न हुआ है, अत: वह राग-Hingluism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sharma | Hingluism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sharma | Hingluism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sharma | Hingluism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sharma | Hingluism Discord Server https://dsc.gg/dharma | Hingluism

 श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण (पूर्वार्ध)—सिंहावलोकन » अङ्क] द्वेषहीन हो ही कैसे सकता है? यहाँतक कि देवता भी किया। उनके स्मरण करते ही भगवतीने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन देकर अपनी शक्तिसे श्रीकृष्ण और अर्जुनको निमित्त बनाकर तपस्वियोंसे द्वेषवश उनके तपको भंग करनेका प्रयास करते हैं। पृथ्वीका भार दूर करनेका आश्वासन दिया। नर-नारायणकी तपस्या—देवराज इन्द्रने धर्मपुत्र नर-इसके बाद व्यासजीने श्रीकृष्णजन्मकी कथा सुनायी। नारायणको तप करते देखकर उन्हें विविध प्रलोभन दिये तथा स्वयं साक्षात् परमात्माने पृथ्वीका भार उतारनेके लिये कंसके मोहिनी मायासे भयभीत करना चाहा, परंतु वे अविचल रहे। कारागारमें अवतार लिया और विभिन्न प्रकारकी लीलाएँ कीं। परब्रह्म परमात्मा होते हुए भी उन्हें पृथ्वीतलपर अनेक अन्तमें उन्होंने कामदेव, रित, वसन्त और अप्सराओंका समूह उनके तपभंगहेतु भेजा। परंतु भगवतीके मायाबीजमन्त्रका जप कष्ट उठाने पड़े। रुक्मिणीके पुत्र प्रद्युम्नका शम्बरासुरने अपनी कर रहे उन दोनोंपर इन सबका कोई प्रभाव नहीं पडा, बल्कि मायासे प्रसूतिगृहसे ही हरण कर लिया था। तब श्रीकृष्णने अप्सराओंके गर्वको भंग करनेके लिये नारायणने अनुपम भगवती महामायाका स्तवन किया। उनकी स्तृतिसे प्रसन्न सुन्दरी उर्वशीकी सृष्टि कर दी। इतना ही नहीं उन्होंने स्वर्गसे होकर जगदम्बाने उन्हें दर्शन दिया और कहा कि सोलह आयी सोलह हजार पचास अप्सराओंकी सेवाके लिये उतनी वर्षबाद तुम्हारा पुत्र शम्बरासुरको मारकर तुम्हारे पास स्वयं ही अप्सराएँ और उत्पन्न कर दीं। स्वर्गसे आयी अप्सराओंने ही वापस आ जायगा। ऐसा कहकर भगवती अन्तर्धान हो गर्यी। मुनि नारायणका रूप और प्रभाव देखकर मोहित हो उनसे रुक्मिणीके पुत्र प्रद्युम्नके बाद जाम्बवतीने भी वैसे ही प्रार्थना की कि हे नाथ! अब आप हम सबके पति बन जायँ। पुत्रकी प्राप्तिके लिये भगवान् श्रीकृष्णसे कहा—इसपर श्रीकृष्णने इसपर नारायणने कहा-इस जन्ममें तो यह सम्भव नहीं है, भगवान् शंकरकी तपस्या की, जिससे प्रसन्न होकर भगवान् परंतु कृष्णावतारमें तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी। शंकरने उन्हें प्रत्येक रानीसे दस पुत्र होनेका वरदान दिया। तत्पश्चात् भगवती पार्वतीने कहा—हे कृष्ण! इस संसारमें अहंकार, राग-द्वेष देवताओंको ही नहीं ऋषि-मृनियोंको भी बाधित करता है, इसी अहंकारके कारण तपस्वी नर-आप सर्वश्रेष्ठ गृहस्थ होंगे। सौ वर्ष व्यतीत होनेपर एक विप्र नारायण और परम वैष्णव भक्त प्रह्लादमें एक हजार दिव्य तथा गान्धारीके शापके कारण आपके कुलका नाश हो जायगा वर्षींतक भयंकर युद्ध हुआ। अन्तमें भगवान् विष्णुने आकर और आप अपने भाई बलरामके साथ यह शरीर छोडकर दिव्य प्रह्लादको नर-नारायणका परिचय दिया। लोकको प्रयाण करेंगे। आपको भविष्यके विषयमें किसी प्रकारकी वस्तुत: इस संसारका मूल कारण ही अहंकार है, चिन्ता नहीं करनी चाहिये; क्योंकि अवश्यम्भावी घटनाओंका उसीके कारण युद्ध होते हैं। राजस और तामस अहंकारके कोई भी प्रतीकार सम्भव नहीं है। ऐसा कहकर भगवान् शिव समस्त देवताओं तथा पार्वतीसहित अन्तर्धान हो गये। कारण कलह होते हैं। इस संसारचक्रका प्रवर्तन भी अहंकारके देवीमाहात्म्यका निरूपण—व्यासजीने कहा—हे राजन्! ही कारण होता है। यहाँतक कि साक्षात् नारायण श्रीहरिको भी नाना प्रकारकी योनियोंमें जन्म लेना पड़ता है। महर्षि भृगुके यद्यपि ब्रह्मा आदि देवता लोकके अधीश्वर हैं, पर वे भी उसी शापसे उन्हें मनुष्य-योनिमें जन्म लेना पड़ा तथा पत्नी-प्रकार उस मायाके अधीन रहते हैं, जैसे कठपुतली बाजीगरके अधीन रहती है। उनके पूर्वजन्मके संचित कर्म जिस प्रकारके वियोगका दु:ख सहन करना पड़ा। कृष्णावतारकी कथा—व्यासजीने राजा जनमेजयसे होते हैं। उन्हींके अनुरूप परब्रह्मस्वरूपिणी माया उन्हें सदा भगवान् श्रीहरिके कृष्णावतारकी कथा सुनाते हुए कहा-हे प्रेरित किया करती हैं। उन भगवतीके हृदयमें किसी प्रकारकी राजन् द्वापरयुगमें पृथ्वीपर जरासन्ध, शिशुपाल, काशिराज, विषमता अथवा निर्ममताका लेशमात्र भी नहीं रहता। वे कंस, रुक्मी और नरकासुर-जैसे पापाचारी शासक हो गये थे। अखिल भुवनकी ईश्वरी जीवोंको भवबन्धनसे छुटकारा दिलानेके लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहती हैं। निर्मल उनके पापभारसे व्यथित होकर पृथ्वी ब्रह्माजी और इन्द्रसहित भगवान् विष्णुके पास गयी। भगवान् विष्णुने ब्रह्माजीसे कहा— अन्त:करणवाले ऋषिगण उन्हीं आत्मस्वरूपिणी भगवतीका हे ब्रह्मन्! हम सब भगवतीके अधीन हैं, अत: हमें उन्हीं अपने हृदयमें आत्मसाक्षात्कार करके भवबन्धनसे मुक्त हुए पराम्बा भगवती योगमायाकी शरणमें जाना चाहिये। उनके हैं। इस प्रकार देवीके माहात्म्यनिरूपणमें चतुर्थ स्कन्धकी ऐसा कहनेपर देवताओंने भगवतीका श्रद्धा-भक्तिपूर्वक स्मरण कथा पूर्ण होती है।

* सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-********************************** पंचम स्कन्ध मणिद्वीप चली गर्यीं और अयोध्याधिपति महाराज शत्रुघ्न पंचम स्कन्धकी कथाके प्रारम्भमें जनमेजयने व्यासजीसे भूमण्डलाधिपति हो गये। उनके शासनकालमें पृथ्वी सभी पूछा कि हे मुनिश्रेष्ठ! स्वयं भगवान् होते हुए भी श्रीकृष्णने प्रकारके सुखोंसे परिपूर्ण थी। शंकरजीकी तपस्या क्यों की ? क्या उनमें कोई न्यूनता थी ? भगवतीके इस उत्तम माहात्म्यको सुनानेके बाद व्यासजीने व्यासजीने कहा—हे राजन्! श्रीकृष्णने मानवदेह धारण शुम्भ-निशुम्भके वधसम्बन्धी देवीके चरित्रको सुनाया। शुम्भ करनेके कारण मानवोचित कार्य किये। जहाँतक श्रेष्ठताकी और निशुम्भने तपस्या करके ब्रह्माजीसे यह वरदान प्राप्त कर बात है तो ॐकारका 'अ' ब्रह्माका रूप है, 'उ' विष्णुका लिया था कि पुरुष-जातिका कोई भी देव, दानव या मानव रूप है, 'म्' शिवका रूप है और अर्धमात्रा (चन्द्रबिन्दु) उन्हें मार न सके। वरदानके प्रभावसे मदमत्त उन दोनोंने स्वर्गपर आक्रमण करके वहाँ अपना आधिपत्य जमा लिया। भगवती महेश्वरीका रूप है। ये उत्तरोत्तर क्रमसे एक दूसरेसे उत्तम हैं। वस्तुत: मकड़ीके तन्तु-जालमें फँसे तब अत्यन्त कष्टमें पडे देवताओंने भगवतीकी स्तृति की, कीटकी भाँति ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश आदि ये सभी देव जिससे प्रसन्न होकर वे प्रकट हुईं। देवताओंने उनसे शुम्भ-उन भगवतीकी लीलासे मायारूपी बन्धनमें पड जाते हैं। निशुम्भ तथा अन्य दानवोंके अत्याचारका वर्णन किया और देवीमाहात्म्यमें महिषासुर आदि दैत्योंके वधकी उनसे त्राण दिलानेकी प्रार्थना की। देवताओंकी प्रार्थनापर कथा—राजा जनमेजयने भगवतीके ऐसे प्रभावको सुनकर भगवतीने अपना एक अन्य रूप प्रकट किया, जो 'कौशिकी' व्यासजीसे उनकी महिमाका वर्णन करनेको कहा। इसपर नामसे जाना गया। उनका दूसरा रूप 'कालिका' नामसे व्यासजीने उन्हें महिषासुरके जन्म, तपस्या और वरदान-विख्यात हुआ। भगवतीके सुन्दर कौशिकी रूपको देखकर प्राप्तिकी कथा सुनायी। उस महिषासुरने ब्रह्मा, विष्णु और एक दिन शुम्भ-निशुम्भके एक सेवकने यह बात शुम्भको बतायी। शुम्भने अपना सुग्रीव नामक एक दूत भगवती शिवसहित इन्द्रादि देवताओंको पराजित करके स्वर्गपर आधिपत्य कर लिया था। देवताओं की दशा अत्यन्त दयनीय हो गयी थी, कौशिकीके पास भेजा। कौशिकीने उसे अपना उद्देश्य बताते अतः इन्द्र ब्रह्माजी और भगवान् शंकरको साथ लेकर भगवान् हुए कहा कि मैं देवताओंको स्वर्गका आधिपत्य और यज्ञ-विष्णुके पास गये। वहाँ उन ब्रह्मा आदि समस्त देवताओंके भाग दिलानेके लिये आयी हैं। तुमलोग पाताल चले जाओ, शरीरसे महान् तेज:पुंज निकला और उस तेजोराशिसे भगवती अन्यथा मुझसे युद्ध करो। जो मुझे युद्धमें पराजित करेगा, वही मेरा पाणिग्रहण कर सकेगा। शुम्भने भगवतीकी युद्धकी जगदम्बाका प्राकट्य हुआ। समस्त देवताओंने उन्हें आयुध और चुनौती सुनकर अपने सेनापितयों क्रमश: धूम्रलोचन, चण्ड-आभूषण समर्पित करके उनकी स्तुति की। देवीने देवताओंको मुण्ड और रक्तबीजको विशाल वाहिनियोंके साथ भेजा; परंतु आश्वासन देते हुए प्रचण्ड अट्टहास किया। उस अट्टहासको सुनकर महिषासुर उद्विग्न हो गया। उसने अपने अमात्यको वे सभी भगवती कालिकाद्वारा मारे गये। शुम्भका भाई निशुम्भ अट्टहास करनेवालेकी खोजमें भेजा।देवीने महिषासुरके अमात्यको भी भगवतीके हाथों मृत्युको प्राप्त हुआ। अन्तमें शुम्भ युद्ध अपने प्राकट्यका उद्देश्य बताते हुए कहा कि या तो समस्त दैत्य करनेके लिये आया और भगवती कालिकाके हाथों मारा गया। पाताल चले जायँ अथवा यमलोक जानेके लिये तैयार हो जायँ। भगवतीके इस उत्तम चरितका आख्यान सुनकर राजा देवीका यह वचन सुनकर महिषासुरने क्रुद्ध होकर युद्ध करनेकी जनमेजयने व्यासजीसे पूछा कि हे मुने! इन उत्तम चरितोंद्वारा घोषणा की। भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें क्रमशः महिषासुरके भगवतीकी आराधना सबसे पहले किसने की ? इसपर व्यासजीने बाष्कल, दुर्मुख, चिक्षुर, ताम्र, बिडाल और असिलोमा आदि बताया कि स्वारोचिष नामक मन्वन्तरमें सुरथ नामके एक राजा सभी सेनापित मारे गये। अन्तमें महिषासुर रणभूमिमें आया और हुए थे। शत्रुओंसे पराजित होकर वे महामुनि सुमेधाके आश्रममें रहने लगे, वहीं अपने परिवारसे परित्यक्त होकर विषादग्रस्त अपने सेनानायकों दुर्धर, त्रिनेत्र और अन्धकके साथ मारा गया। समाधि नामक एक वैश्य भी आकर रहने लगा। दोनों अत्यन्त उसके मर जानेपर सभी देवता, मुनिगण, मनुष्य और साधुजन दु:खित थे, उन्होंने सुमेधामुनिसे अपने दु:खकी निवृत्तिका प्रसन्न हो गये। देवताओंने भगवतीकी स्तृति की। देवीने कहा कि जब तुम सबको कोई घोर संकट पड़े तब मेरा स्मरण करना, उपाय बतानेकी प्रार्थना की। इसपर उन्होंने महामायाकी

महिमाको एक दुष्टान्तद्वारा बताया कि ब्रह्मा, विष्णु आदि

मैं तुम सबकी रक्षा करूँगी। यह कहकर देवी अपने धाम

अङ्क] * श्रीमद्देवीभागवतमहापुराष कक्रकक्रकक्रकक्रकक्रकक्रकक्रकक्रकक्रकक्	T (पूर्वार्ध)—सिंहावलोकन * २७ फफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफ
शिवपूजामें केतकी पुष्पका निषेध—एक बार ब्रह्मा-	व्यासजीने विस्तारपूर्वक इस कथाका वर्णन किया। देवताओंमें
विष्णुमें परस्पर विवाद हुआ कि दोनोंमें श्रेष्ठ कौन है ? उसी	श्रेष्ठ त्वष्टा नामके एक प्रजापति थे, जो महान् तपस्वी और
समय एक अखण्ड ज्योति लिंगके रूपमें प्रकट हुई तथा	देवताओंका कार्य करनेमें अतिकुशल थे। उन्होंने इन्द्रसे द्वेषके
आकाशवाणी हुई कि आप दोनों इस लिंगके ओर-छोरका पता	कारण तीन मस्तकोंसे सम्पन्न एक पुत्र उत्पन्न किया, जिसे
लगायें। जो पहले पता लगायेगा, वही श्रेष्ठ होगा। विष्णु	'त्रिशिरा' कहते हैं। वह एक मुखसे वेदाध्ययन करता था,
पातालकी ओर गये और ब्रह्मा ऊपरकी ओर। विष्णु थककर	दूसरे मुखसे मधुपान करता था और तीसरे मुखसे सब दिशाओंका
वापस आ गये। ब्रह्माजी शिवके मस्तकसे गिरे हुए केतकी	निरीक्षण करता था। वह त्रिशिरा भोगका त्याग करके संयमी
पुष्पको लेकर ऊपरसे लौट आये और विष्णुसे कहा कि यह	और धर्मपरायण तपस्वी होकर अत्यन्त कठोर तप करने
ु केतकी पुष्प मैंने लिंगके मस्तकसे प्राप्त किया है। केतकी	लगा। उसके तपको देखकर इन्द्र भयभीत हो गये। उन्होंने
पुष्पने भी ब्रह्माके पक्षमें विष्णुको असत्य साक्ष्य दिया। इसपर	तपभंग करनेके लिये अप्सराओंको भेजा, परंतु उसमें सफलता
भगवान् शिव प्रकट हो गये और उन्होंने असत्यभाषिणी केतकीपर	न मिलनेपर उन्होंने स्वयं जाकर अपने तीव्रगामी आयुध
क्रुद्ध होकर उसे सदाके लिये त्याग दिया। तब ब्रह्माजीने भी	वज्रसे उसका वध कर दिया।
लुज्जित होकर भगवान् विष्णुको नमस्कार किया। उसी दिनसे	अपने पुत्रके वधका समाचार सुनकर त्वष्टा अत्यन्त
भगवान् शंकरकी पूजामें केतकी पुष्पके चढ़ानेका निषेध हो गया।	क्रुद्ध हो गये और उन्होंने अथर्ववेदोक्त मन्त्रोंसे अग्निमें हवनकर
ऋषि बोले—हे राजन्! यह माया इतनी प्रबल है कि	एक तेजोमय प्रकाशमान पुरुषको प्रकट किया। त्वष्टाने अपने
यह ज्ञानियोंको भी मोहमें डाल देती है। स्वयं देवाधिदेव	इस पुत्रका नाम 'वृत्रासुर' रखा और इसे इन्द्रके वधके लिये
लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु भी इस महामायासे अछूते नहीं हैं।	प्रेरित किया। वृत्रासुरने इन्द्रपर आक्रमणकर उन्हें पराजितकर
जब देवता या मनुष्य इनकी स्तुति करते हैं, तब प्राणियोंके	उनके गजराज ऐरावतको छीन लिया। यद्यपि त्वष्टा इससे
दु:खका नाश करनेके लिये वे भगवती जगदम्बा प्रकट होती	प्रसन्न हो गये, परंतु उन्होंने इन्द्रको मारनेके लिये अपनी
ु हैं। वे भगवती दैवके अथवा कालके अधीन नहीं हैं। वे स्वयं	शक्तिका संचय करनेकी दृष्टिसे ब्रह्माजीके प्रसन्नार्थ वृत्रको
जगत्का सृजन, पालन और संहार करती हैं। ब्रह्मा, विष्णु,	तपस्या करनेकी प्रेरणा की। वृत्रासुरने अपनी तपस्यासे ब्रह्माजीको
महेश तो निमित्तमात्र हैं। उन्होंने सरस्वती, लक्ष्मी तथा पार्वतीके	प्रसन्नकर समस्त अस्त्र–शस्त्रोंसे अवध्यताका वरदान प्राप्तकर
रूपमें उन्हें अपनी शक्तियाँ प्रदान की हैं।	स्वर्गलोकपर आक्रमणकर वहाँ अपना आधिपत्य कर लिया।
इस प्रकार देवीका माहात्म्य-वर्णन करनेके बाद ऋषिने	इन्द्रसहित सभी देवगण चिन्ताग्रस्त हो गये और वे ब्रह्मा तथा
उनके पूजन आदिकी विधि बताकर भगवतीकी आराधना	
करनेकी प्रेरणा दी। राजा सुरथ और वैश्य समाधि दोनोंने	रक्षाकी प्रार्थना की। भगवान् विष्णुने वृत्रासुरकी बलवत्ताको
मुनिकी प्रेरणासे भगवतीका आराधन किया, जिससे प्रसन्न	समझते हुए देवताओंको किसी प्रकार उससे मित्रता—सन्धि
होकर भगवतीने प्रकट होकर उन्हें इच्छित वरदान दिया।	करने और विश्वासमें लेकर बादमें उसे मारनेकी योजना
राजा सुरथ एवं समाधि वैश्यको वरदान —राजा	बतायी। इसके साथ ही महामाया भगवतीके प्रसन्नार्थ आराधना
सुरथने अपना राज्य प्राप्त करनेका वरदान माँगा, जिसके	करनेके लिये भी कहा; क्योंकि भगवतीकी मायासे मोहित
फलस्वरूप वे दस हजार वर्षोंतक भूमण्डलका शासन करके	होकर ही वृत्रासुर सुगमतापूर्वक मारा जा सकेगा।
सावर्णिमनु हुए। समाधि वैश्यने मोक्षं देनेवाले दिव्य ज्ञानकी	देवताओंने आराधनाकर भगवतीको प्रसन्न किया और
प्राप्तिका वरदान माँगा, जिसके फलस्वरूप वे ज्ञान प्राप्तकर	वरदान प्राप्त किया। तदनन्तर इन्द्रने वृत्रासुरसे सन्धिकर उसे
जीवन्मुक्त हो गये। इस प्रकार पंचम स्कन्धकी कथा पूर्ण हुई।	विश्वासमें लेकर छलपूर्वक उसका वध कर दिया।
षष्ठ स्कन्ध	इन्द्रको शापप्राप्ति —उधर त्वष्टाको जब अपने पुत्र
वृत्रासुरके वधकी कथा —षष्ठ स्कन्धके प्रारम्भमें	वृत्रासुरके छलपूर्वक वधकी जानकारी हुई तो उन्होंने इन्द्रको
राजा जनमेजयने व्यासजीसे यह प्रश्न किया कि इन्द्रने भगवान्	दारुण कष्ट प्राप्त होनेका शाप दे दिया, इन्द्रको ब्रह्महत्या लग

* सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-गयी और वे इन्द्रपदसे च्युत हो गये। इन्द्र उस ब्रह्महत्यासे होते। सबके शरीर-धारणका कारण उनका कर्म ही होता है। भयभीत होकर मानसरोवरमें स्थित एक कमलनालमें प्रविष्ट कर्मके समाप्त हो जानेपर प्राणियोंका जन्म लेना भी समाप्त हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं है। हो गये। स्वर्गके इन्द्ररहित हो जानेसे अनेक उपद्रव होने लगे, अनावृष्टिके कारण पृथ्वी भी वैभवशून्य हो गयी। देवताओं हे राजन्! ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र, देवता, दानव, यक्ष, और मुनियोंने इस प्रकारकी अराजकता देखकर राजर्षि नहुषको गन्धर्व सभी कर्मके वशीभूत हैं। इन सभीको पूर्वकालमें किये शुभ-अशुभ कर्मींका फल भोगना पडता है। देवांशसे उत्पन्न इन्द्र बना दिया। पाण्डव तथा नारायणके अंश श्रीकृष्णको भी यहाँ अनेक राजा नहषकी कथा — नहुष धर्मात्मा थे, पर राजसीवृत्ति और स्वर्गके सुखोंका उपभोग करते हुए वे इन्द्राणीके प्रति प्रकारके कष्ट भोगने पड़े। युगधर्मके प्रभावसे साधुजनोंकी भी मित मिलन हो विषयासक्त हो गये। इन्द्राणी इन्द्रकी अनुपस्थितिसे वैसे ही दु:खी थी, इस नयी विपत्तिके आ जानेपर उसने देवगुरु जाती है। इसी कारण तुम्हारे धर्मात्मा पिता राजा परीक्षित्ने एक बृहस्पतिकी शरण ली। बृहस्पतिके परामर्शसे शचीने भगवती तपस्वीके गलेमें मृत सर्प डाल दिया था। उनकी बुद्धिको कलिने ऐसा करनेके लिये प्रेरित किया था। कलियुगमें जगदम्बाकी आराधना की, जिससे प्रसन्न होकर भगवतीने सत्यमूलक धर्मका सर्वथा क्षय हो जाता है। सत्ययुगमें सभी इन्द्राणीको दर्शन दिया और अपनी एक दूतीके साथ शचीको वर्णोंके लोग भगवती पराम्बाके पूजनमें आसक्त रहते हैं, त्रेतामें मानसरोवर भेजकर इन्द्रके दर्शन करा दिये। धर्मकी स्थिति सत्ययुगसे कम और द्वापरमें त्रेतासे कम होती शचीने इन्द्रको अपनी विपत्तिसे अवगत कराया। इसपर इन्द्रने अपनी पत्नी इन्द्राणीको यह परामर्श दिया कि तुम है। नहुषसे जाकर एकान्तमें कहना कि आप ऋषियोंद्वारा वहन चित्तशृद्धिकी महिमा—हे राजन्! पृथ्वीपर अनेक पुण्यदायिनी निदयाँ, तीर्थ, सरोवर, अरण्य और क्षेत्र हैं; पर किये जानेवाले दिव्य वाहनसे मेरे पास आयें, ऐसा होनेपर मैं प्रेमपूर्वक आपके वशमें हो जाऊँगी। शचीने ऐसा ही किया। चित्तकी शुद्धि सबसे प्रधान है। चित्त शुद्ध न होनेसे तीर्थसेवनका उधर भगवतीने नहुषकी बुद्धिको मोहित कर दिया, कोई फल नहीं होता। जिससे उस पापबुद्धिने इन्द्राणीकी प्राप्तिकी इच्छासे दिव्य आहारकी शुद्धिसे ही अन्त:करणकी शुद्धि होती है और मुनियोंको अपनी पालकीका वहन करनेमें लगा दिया। इतना चित्त शुद्ध होनेपर ही धर्मका प्रकाश होता है। आचारसंकरतासे धर्ममें व्यतिक्रम उत्पन्न होता है और धर्ममें विकृति होनेपर ही नहीं उस मृद् राजाने तपस्विश्रेष्ठ महर्षि अगस्तिके सिरका पैरसे स्पर्श करते हुए 'सर्प-सर्प' कहा, जिससे क्रुद्ध होकर वर्णसंकरता उत्पन्न होती है। इस प्रकार सभी धर्मोंसे हीन कलि-उन महामुनिने उसे सर्प होनेका शाप दे दिया। इस प्रकार युगमें अपने-अपने वर्णाश्रमधर्मकी चर्चा भी कहीं नहीं सुनायी नहुषके पतनके बाद भगवतीकी कृपासे इन्द्रको पुन: स्वर्गका देती। धर्मज्ञ और श्रेष्ठजन भी अधर्म करने लग जाते हैं। राज्य प्राप्त हो गया। महर्षि वसिष्ठ और विश्वामित्रकी कथा— पूर्वकालमें राजा जनमेजयने यह आख्यान सुनकर व्यासजीसे पूछा— पवित्र मानसरोवर तटपर रहते हुए विश्वामित्र और विसष्ठ-हे ब्रह्मन्! सौ यज्ञ करनेवाले देवताओं के स्वामी इन्द्रको भी जैसे श्रेष्ठ मुनियोंने दस हजार वर्षोंतक परस्पर युद्ध किया था। अपने स्थानसे च्युत क्यों होना पड़ा? इस प्रश्नके उत्तरमें उन सत्त्वप्रधान मुनियोंका यह युद्ध उनके क्रोधके वशीभूत व्यासजीने उन्हें कर्मकी गहन गतिके बारेमें बताया। हो जानेके कारण हुआ था। सूर्यवंशी राजा हरिश्चन्द्र विसष्ठजीके विविध कर्मींका निरूपण — शास्त्रोंमें संचित, वर्तमान यजमान थे। वे वरुणदेवकी प्रसन्तताके लिये यज्ञ कर रहे थे, और प्रारब्धके भेदसे कर्मकी तीन गतियाँ बतलायी गयी हैं। जिसमें शुन:शेप नामक एक ब्राह्मणपुत्रको यज्ञीय पशु बनाया गया था। विश्वामित्रने राजा हरिश्चन्द्रको ऐसा करनेसे रोका, अनेक जन्मोंमें किया गया कर्म संचितकर्म कहा गया है; जो परंतु प्रतिज्ञाबद्ध राजा न माने। अन्तमें विश्वामित्रजीने शुनःशेपसे सात्त्विक, राजस और तामस तीन प्रकारका होता है। हे राजन्! बहुत समयके संचित शुभ या अशुभकर्म पुण्य या पापके वरुणमन्त्रका जप कराकर उसकी रक्षा की। विश्वामित्रने राजा रूपमें अवश्य ही भोगने पड़ते हैं। जीवोंके प्रत्येक जन्ममें हरिश्चन्द्रके इस व्यवहारसे कुद्ध होकर छलपूर्वक उनका संचिमान्नेमं।इक्साDispectropiSertyerrattiffa://बीserges/dharmana: बीन MtAAP हिस्सी चित्ति किसे विश्लेष्ट्रिक्शं inas st/हित

अङ्क] * श्रीमद्देवीभागवतमहापुराए कककककककककककककककककककककककककककक	ग (पूर्वार्ध)—सिंहावलोकन * २९ ssssssssssssssssssssssssssssssssssss
	—————————————————————————————————————
आडी हो जानेका शाप दिया। इस प्रकार परस्पर शापग्रस्त और	3
युद्धरत देखकर ब्रह्माजीने उन्हें समझाया और शापमुक्त किया	•
राजा निमिका वृत्तान्त —वसिष्ठजीने इसी प्रकार	
क्रोधके वशीभूत होकर पूर्वकालमें राजा निमिको भी शाप दे	-
दिया था। राजा निमि वसिष्ठजीके यजमान थे, वे एक देवीयज्ञ	प्रथम शाब्दिक ज्ञान, जो बुद्धिकी सहायतासे वेद और शास्त्रके
करना चाहते थे और उन्होंने इसे सम्पन्न करानेके लिये गुरु	अर्थज्ञानद्वारा प्राप्त हो जाता है। दूसरा अनुभव नामक ज्ञान है,
वसिष्ठसे प्रार्थना की, परंतु वसिष्ठजी उस समय इन्द्रका यज्ञ	जो दुर्लभ होता है। यह ज्ञान तब प्राप्त होता है, जब इसके जानने-
करानेके लिये चले गये और निमिसे बोले कि तुम यज्ञसामग्री	वालेका संग हो जाता है। हे भारत! शब्दज्ञानसे कार्यकी सिद्धि
एकत्रित करो। राजा निमिने समस्त यज्ञसामग्री एकत्रित करके	नहीं होती, इसलिये अनुभवज्ञान ही विशेष महत्त्वपूर्ण है।
सैकड़ों वर्षोंतक वसिष्ठजीकी प्रतीक्षाके अनन्तर गौतमऋषिको	कर्म वही है, जो बन्धन न करे और विद्या वही है, जो
आचार्य बनाकर अपना यज्ञ प्रारम्भ करा दिया। इससे क्रुद्ध	मुक्तिके लिये हो। अन्य कर्म तो मात्र परिश्रमके लिये होता
होकर विसष्ठजीने उन्हें शाप दे दिया कि हे राजन्! तुम्हारा	है तथा दूसरी विद्या तो मात्र शिल्पसम्बन्धी कौशल है। शील,
शरीर नष्ट हो जाय। इसपर राजा निमिने भी उन्हें शाप देते	परोपकार, क्रोधका अभाव, क्षमा, धैर्य और सन्तोष—यह सब
हुए कहा कि हे धर्मज्ञ! आपने क्रोधके वशीभूत होकर मुझे	विद्याका अत्यन्त उत्तम फल है।
अकारण ही शाप दे दिया है। अत: आपकी यह क्रोधयुक्त	हैहयवंशमें एकवीरकी कथा —हे राजन्! काम, क्रोध,
देह आज ही नष्ट हो जाय। इससे विसष्ठकी देह नष्ट हो गयी	े लोभ, मोह और अहंकार—ये चार शत्रु शरीरमें सदा विद्यमान
और पुन: उन्होंने मित्रावरुणके तेजसे अगस्तिके साथ एक	रहते हैं, इन्हींके प्रभावसे सत्त्वगुणी तपस्वी मुनिगण भी
कुम्भसे जन्म ग्रहण किया। राजा इक्ष्वाकुने उनका पालन-	प्रभावित हो जाते हैं, फिर रजोगुणी और तमोगुणी क्षत्रियों तथा
पोषण किया और कालान्तरमें वे उनके वंशके पुरोहित बने।	अन्य वर्णोंका तो कहना ही क्या? पूर्वकालमें हैहयवंशी
उधर भगवतीके यज्ञमें दीक्षित राजा निमिकी देहको	*
ऋत्विजोंने मन्त्रशक्तिसे सुरक्षित बनाये रखा और यज्ञकी	
सम्यक् प्रकारसे पूर्ति हो जानेके बाद देवीके वरदानसे उन्हें	- · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
निर्मल ज्ञानकी प्राप्ति हुई और समस्त प्राणियोंके नेत्रोंमें उनका	
निवास हो गया तथा प्राणियोंके नेत्रोंमें पलक गिरानेकी शक्ति	3 '
आ गयी। निमिके निवासके कारण ही मनुष्य, पशु तथा पक्षी	
'निमिष'(पलक गिरानेवाले) और देवता'अनिमिष'(पलक	
न गिरानेवाले) हो गये।इसके अनन्तर मुनियोंने अरणिकाष्ठपर	
रखकर निमिकी देहका मन्थन किया, जिससे उन्हींके समान	
एक बालक उत्पन्न हुआ, जो 'मिथि', 'विदेह' और 'जनक'	,
नामसे जाना गया तथा उनके कुलमें उत्पन्न सभी राजा 'विदेह '	-
कहे गये। उन्होंने ही एक सुन्दर नगरीका निर्माण कराया, जो	- · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
'मिथिला' नामसे विख्यात है।	एकवीरने भगवतीके सिद्धिप्रदायक मन्त्रसे दीक्षित होकर
इसके अनन्तर राजाने पुन: प्रश्न किया कि वसिष्ठजी	
श्रेष्ठ ब्राह्मण और राजा निमिके पुरोहित थे तो भी राजा निमिने	
अपने गुरु और ब्राह्मण वसिष्ठको क्यों शाप दिया और क्षमा	
क्यों नहीं किया ? इसपर व्यासजी बोले—हे राजन्! अजितेन्द्रिय	
प्राणियोंके लिये क्षमा अत्यन्त दुर्लभ है। कार्य–कारणस्वरूप	इस अद्भुत आख्यानको सुनकर राजा जनमेजयने कहा



* सदा सेव्यं सदा सेव्यं देवीभागवतं नरै: * [श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण-************************************ कि हे भगवन्! यह तो बड़े ही विस्मयकी बात है कि भगवान् आश्रयकी आवश्यकता भी थी, अतः वे राजा तालध्वजकी विष्णुको घोडेका रूप धारण करना पड़ा, वे पुरुषोत्तम भगवान् तो महारानी बन गये। कालान्तरमें वे अनेक पुत्रोंकी माता भी सदा स्वतन्त्र रहते हैं, उन्हें ऐसा रूप क्यों धारण करना पड़ा? बने। उनके अनेक पौत्र भी हुए। इस प्रकार वे मायाविमोहित इसपर व्यासजीने इस कथाका विस्तारसे वर्णन किया हो अपने परिवारमें ही अत्यन्त आसक्त हो गये, उनका दिव्य तथा कहा-हे राजन्! इस सारहीन जगत्में कभी किसीको ज्ञान विस्मृत हो चुका था। सुख नहीं प्राप्त होता है। यह कहकर उन्होंने अपना जीवनवृत्त— एक बार किसी दूसरे देशके राजाने तालध्वजके राज्यपर जन्म, मातृविछोह, तपस्या, पुत्रप्राप्ति, पुन: पुत्रविछोह तथा आक्रमण कर दिया। भयानक संग्राममें राजा तालध्वजके सभी पुत्र और पौत्र मारे गये। स्त्रीरूपधारी नारदजीने रणभूमिमें धृतराष्ट्र, पाण्डु, विदुर आदिकी उत्पत्तिका वर्णन किया। तत्पश्चात् व्यासजीने पाण्डवोंके जन्म, उनकी शिक्षा-दीक्षा, जाकर अपने पुत्र-पौत्रोंको मृत देखा तो विलाप करने लगे।

विवाह, राजसूययज्ञ और वनवासकी कथा सुनायी। इसके अनन्तर व्यासजीने बताया कि पाण्डवों और द्रौपदीको वनवासमें अनेक प्रकारके दु:ख और अपमान सहने पड़े,जिन्हें देखकर ज्ञानवान् होते हुए भी मैं मोहित हो गया। इस प्रकार यह मोह ज्ञानियोंको भी विक्षुब्ध कर देता है। नारद तथा पर्वत-जैसे

मुनियोंने इसी मोहके वशीभूत होकर दमयन्ती नामक एक राजकुमारीकी प्राप्तिके लिये एक-दुसरेको शाप दे दिया था। वस्तुत: माया अत्यन्त बलवती है और यह जगत् भी मायाके गुणोंसे ही विरचित है। काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, ममता, अहंकार और मद-इन शक्तिशाली विषयोंको जीतनेमें कोई सक्षम नहीं हो सकता। भगवती महामायाका चरित्र अत्यन्त अद्भृत है, उन्होंने ही स्थावर-जंगमात्मक जगतुको मोहित कर रखा है।

महामायाकी महिमामें देवर्षि नारदकी कथा—एक बार नारदजीके मनमें अहंकारवश यह भ्रान्ति हो गयी कि मैं इन्द्रियों, क्रोध और मायाको जीत लेनेवाला तपस्वी हूँ। इसपर भगवान् विष्णुने उन्हें समझाया कि जब मैं, ब्रह्मा, शिव और सनक आदि मुनि भी मायापर विजय नहीं प्राप्त कर सके तो तुम्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिये। इसपर नारदजीने मायाको

देखनेकी इच्छा प्रकट की।

भगवान् विष्णु गरुडपर उन्हें बैठाकर एक दिव्य रमणीय सरोवरके तटपर ले गये और उनसे उसमें स्नान करनेको कहा। उस सरोवरमें जैसे ही नारदजीने डुबकी लगायी, वे एक सुन्दर युवतीके रूपमें परिणत हो गये। सरोवरसे निकलनेपर

उन्हें अपने स्वरूपका ज्ञान विस्मृत हो चुका था। भगवान् विष्णु वहाँसे अन्तर्धान हो चुके थे। इतनेमें ही तालध्वज

जंगमरूप समस्त जगत्को अपने वशमें किये हुए है, वह माया भी सदा संविद्रूप परमतत्त्वमें स्थित रहती है। वह उसीके अधीन रहती हुई तथा उसीसे प्रेरित होकर जीवोंमें सदा मोहका संचार करती है। अत: विशिष्ट मायास्वरूपा भगवती जगदम्बाका ध्यान, पूजन, वन्दन तथा जप करना चाहिये। उन्हें छोडकर

आओ, वहाँ क्या कर रहे हो?

महामायाजनित है।

इतनेमें वृद्ध ब्राह्मणरूपधारी भगवान् विष्णुने वहाँ आकर

उनको जगतुकी नश्वर गति समझाते हुए सरोवरमें स्नानकर

मृत पुत्र-पौत्रोंको तिलांजिल देनेको कहा। तब जैसे ही स्त्रीरूपधारी

नारदजीने उस सरोवरके जलमें डुबकी लगायी तो वे अपने

वास्तविक नारदरूपमें आ गये। भगवान् विष्णु तटपर उनकी

वीणा और मृगचर्म लिये खड़े थे। नारदजीको पुन: अपने

स्वरूपकी स्मृति हो आयी तो वे विस्मयमें पड गये, उन्हें

विस्मयान्वित देखकर भगवान् विष्णुने कहा—हे नारद! यहाँ

आया देखकर विलाप करने लगे। तब भगवान् विष्णु तथा

नारदने उन्हें प्रबोधित किया। उनकी ज्ञानचर्चासे राजा तालध्वजके

मनमें वैराग्यभाव उत्पन्न हो गया। इसके बाद भगवान् विष्णुने

नारदजीसे कहा-हे महामते! देखो, यह सारा खेल

व्यासजीने राजा जनमेजयसे कहा—हे राजन्! जो माया स्थावर-

श्रीमदेवीभागवतकी महिमा — इस आख्यानको सुनाकर

इधर राजा तालध्वज अपनी स्त्रीको सरोवरसे वापस न

अन्य कोई भी देवता उस मायाको दूर करनेमें समर्थ नहीं है। उनकी प्रसन्नताके लिये जो मनुष्य सम्पूर्ण पुराणोंके सारस्वरूप, वेदतुल्य इस श्रीमद्देवीभागवतमहापुराणका श्रद्धा-भक्तिपूर्वक पाठ अथवा श्रवण करता है, वह ऐश्वर्यसम्पन्न तथा ज्ञानवान्

नामक एक राजा उधर आ निकला और सुन्दर स्त्रीके रूपमें नारदजीको देखकर उसने उनसे प्रणय-याचना की। नारदजीको हो जाता है। इस प्रकार देवीके माहात्म्यमें श्रीमदेवीभागवतके अपना ज्ञान तो विस्मृत हो ही चुका था, स्त्रीके रूपमें उन्हें षष्ठ स्कन्धकी कथा पूर्ण हुई। — राधेश्याम खेमका